पुस्तकालय

166

166

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शा० ह० केन्द्र)
क्रमांक 166

199

कथा, पाठ, भेटा, आरतीऐं

श्री दुर्गा अवतार

वैष्णों भजन कथा

*_*_*_*_*_*_*

प्रोफैसर कवि :

दुर्गा सिंह प्यास ऐन्ड सन्ज़

दुर्गा पुस्तक भन्डार

संगत पुरा लुधियाणा

ब्रांचकटड़ा वैशनों देवी

श्री गणेश पूजा

तर्ज-कीरतन

गौरी पत्र गणेश प्रिथम प्रणाम करा ।।
पहिले श्री गणेश मनाईए ।।
शरधा दे न ल सीस निवाईए ।।
काटे सगल कलेश ।। प्रिथम प्रणाम करां......

शिव शंकर जी का पुत्र कहैया
पारबती जी ने गोद खिडाया
गड़ परबत तेरा देश । प्रिथम प्रणाम करां......

तेल सन्धूर तेरे अंग भड़ाईए ।
मेवा लडूआं भोग लगाईए
भेटा पुषप विशेष । प्रिथम प्रणाम करां......

धूप घरित की जोत जगाकर
आरती करोए मन चित ला कर
रक्षा करो हमेश । प्रिथम प्रणाम करां......

मय्या जी के दवारे

तर्ज--मैं तो चला जिधर चले रस्ता [धड़कन]

मैं तो चला मय्या जी के दवारे
मुझ को खबर है दूर मेरी मंजिल
लाखों भक्त होंगे मेरे भी साथी
जय जय बुलाऊंगा मैं मय्या की पल पल
हैं प्रबतों की चोटीएं वहां
हैं भवन मय्या का यहां
है भक्त वहां जा रहें
आशा पहुंचाती है मां
मय्या जी की मैहिमा
मैं देखूं किधर किधर किधर। मैं तो चला...

गूंज पड़े जय कारों से
प्रबत के नज़ारों से
मैंने जाकर नहाना है
निर्मल जल की धारों से
भेंट पुष्प की डालीयां
सेहरे हैं बनाए मालीयां
भक्तों के हैं मस्तक पर
नाम रंगन की लालीयां
मय्या जी की जय जय
मैं देखूं जिधर जिधर जिधर। मैं तो चला......

गा लो भेटां गा लो

तर्ज- गालो मुस्करा लो [ललकार]

गालो भेटां गालो खुल्ले दर्शन पालो
माटी का शरीर भांडा कब फूट जाए।
भक्तों की डोर मय्या जी की ओर
क्या जाने गेड़ चुरासी छूट जाए। गालो......

मां का दवारा है सब का सब का सहारा
भक्त जनों की जो आस पुचाए।
पिछे जो गुजरा है जीवन हमारा
मुमकन है वो लोट कर फिर से आए।
अब येह दिल पापों से हटालो। गालो......

चार दिनों का येह दुनिया है मेला
काहे को पाप का धन है कमाना
आया अकेला तो जाना अकेला
अन्त को है साथ धर्म हो जाना
झूठे सब नाते प्रीती मां से लगालो। गालो......

भक्ती का मार्ग स्वर्ग की निशानी
भले पुरष जीवन को खोहते नहीं
आगे लिए उसने क्या फ़ल है खाना
बीज धर्म का जो बोहते नहीं
दुर्गा सिह कैहता है जी जीवन बनालो। गालो...

मय्या का मन्दिर है ऐसा

तर्ज–येह राखी बन्धन है ऐसा (बेईमान)

मय्या का मन्दिर है ऐसा मय्या का मन्दिर है ऐसा
वोह तो ऐसे चमकां मारे
जैसे नील गगन के तारे
जिसको सीस झुकाते सारे
मय्या का मन्दिर है ऐसा.....

भवन के ऊपर लाल रंग के झन्डे अजब सुहाए
दर्शन मां के पाने को है भक्त दूर से आए
जिसको पूज रहा जग सारा
ऐसा शक्ती जी का दवारा
बैहती चरणों में जल धारा
मय्या का मन्दिर है ऐसा......

भक्तों की है लीला दुवारे गूंज रहे जय कारे
शेरां वाली शक्ती मय्या भक्त जनों को तारे
कैहता जोती का प्रवाना
मां की महिमाँ को मिल गाना
वहाँ से पूर्ण होती चाहना
मय्या का मन्दिर है ऐसा.......

पापी की पुकार

तर्ज—चिंगारी कोई भड़के [अमर प्रेम]

हमारी येह रूह भड़के कब मय्या दर्श दिखाए
मय्या जब जोत जगाए तों उसे कौन बुझाए
है उहनों ने दर्शन पाए. जो शर्धा भेट ले आए
मां बिन सिमरण के मैंने यूं सांस बिताए
मुझसे मत कोई पूछो जीवन है क्या पापी का।
जब चित्र गुप्त जी मेरा हिसाब करें कापी का।
जो मैंने पाप कमाए, नहीं गिनने पाए।
मन मेरा अब पछताए, कुछ पेश ना जाए।
हमारी येह रूह भड़के कब मय्या दर्श दिखाए।
मेरे को बखशो माता बच्चों से गुनाह हो जाते
मां उन्हें माफ कर देती जो भुलों को बखशाते
जो पांच तत् की त्रष्णा माता जी उसे बुझाए।
विध माता लेख लिखे जो उसे कौन मिटाए।
हमारी येह रूह भड़के कब मय्या दर्श दिखाए।
मय्या जब जोत जगाए तो उसे कौन बुझाए

चलो दरबार चलो

तरज...चलो दिलदार चलो [पाकीजा]

चलो दरबार चलो
मय्या जी के दवार चलो
हम हैं तयार चलो

आओ माता के दरस पाने आओ
मय्या जी की महिमा मिल गाने आओ

चलो दरबार चलो
मय्या जी के दवार चलो
हम हैं तयार चलो

मांगे फल मय्या जी से पालो भक्तो
शर्धा की भेंट को झड़ा लो भक्तो

चलो दरबार चलो
मय्या जी के दवार चलो
हम हैं तयार चलो

दुर्गा की जोती है जग रही प्यारी
शेरों पे अम्बे मय्या की सुवारी

चलो दरबार चलो
मय्या जी के दवार चलो
हम हैं तयार चलो

जय बोलो माँ के शान की

तरज...जय बोलो बेईमान की [बेईमान]

कैसे करूं मैं शोभा मय्या जी के स्थान की
जय बोलो । जय बोलो मां के शान की।

ब्रह्मा मां के दवारे आकर वेद ऊचारे चार
विष्णू शंकर करे आरती ले फूलों के हार
मय्या जी की जोती को है पूज रहा संसार
चार गुना फल देता है जी मय्या का दरबार
पूजा करते कृष्ण राधका राम चन्दर अर जानकी
जय बोलो । जय बोलो मां के शान की।

मुखड़ा खोलो जय जय बोलो जपो नाम की माला।
मन्दिर में गुलजार खिली है जोतों का ऊजिआला।
नारद निरत करे दवारे पर जिसका ढंग निराला।
ऐसा भवन मय्या का सुन्दर सारे जग से आला।
गुफा के अन्दर मात बिराजे, दर चौंकी हनूमान की।
जय बोलो। जय बोलो मां के शान की।

सीस मय्या के छत्र बिराजे सोना चमक दिखाए।
सूहा लाल मय्या का चेला पुष्पहार गल्ल पाए
पाप सभी खंडन हो जाते जो कोई सीस झुकाए
स्वर्ग पुरी से भवन निराला महिमा कही ना जाए
दुर्गा सिंह मय्या का दर्शन मूरत है भगवान की।
जय बोलो । जय बोलो मां के शान की।

संगत मिलाप

तर्ज... कुझ ऐसी अदाओं से [मेरा यार]

संग शेरां वाली मय्या जी के दरबार चला
दरस होगा ऊसे जो पांच तत मार चला
मैं चला वोह चला जो भी चला
दुवारे मेरी मय्या जी के
जो भी निश्चय से चला जाता है।
मन मांगा फल प्रेमी मेरी मय्या जी से पाता है
जो भी चला जीवन का करने को सुधार चला
दरस होगा ऊसे जो पांच तत मार चला
गुफा के बीच मेरी श्री वैष्णों मां रैहती है
निरमल चरन गंगा मां के चरणों से बैहती है
हर जीव मां का ही करने को सतकार चला
दरस होगा ऊसे जो पांच तत मार चला
नैहचा वाले भक्तों की है आस पहुंचाती शक्ती
अपने [सेवक] को दर्शन है दिखाती शक्ती
दुर्गा सिंह मां का करने को ही प्रचार चला
दरस होगा ऊसे जो पांच तत मार चला

किते माँ दीयाँ भेटां सुण भक्ता

भेट तर्ज–घड़ा वजदा घड़ोली वजदी

छैणे वजदे मरदिंग वजदी ।
कदी चिमटा वी वजदा सुण भक्ता
गाने सुनदा रकाट सुणदा ।
किते मां दीयां भेटा सुण भक्ता
दर्शन खातर संगतां आईयां ।
मंगीयां मुरादां भक्तां पाईयां ।
विच जगराते फुल पए बरसन
जदों कढदे ने साजां दी धुण भक्ता
किते मां दीयां भेटां सुण भक्ता । छैने–
भवन माता दा रंग रंगीला ।
जिथे लगी होई नाम दी लीला ।
दुनियां चरन ओहनां दे चुमदी ।
जिनां भक्तां दे विच गुण भक्ता ।
किते मां दीयां भेटा सुण भक्ता । छैने ..
माता जी दे दर्शन पा लै ।
भेटा सुन के प्यास मिटा लै ।
झूठे रस दुनियां दे गाने
कदी नाम दे मोती चुण भक्ता
किते मां दीयां भेटां सुण भक्ता । छैणे–

श्री वैष्णों माता की भेंट

तरज– बलमा सपईया [दुशमन]

वैष्णों मय्या मां जी तेरी सुन्दर गुफा प्यारी लागे
लागे जी जिसमें जगमग जगमग जगमग जोती जागे
शतर सुनैहरी तेरे सीस पर साजे मां।
सूहा सूहा चोला तेरे अंग बिराजे मां।
गल पुष्पों की माला है, दर्शन तेरा निराला है
अम्बे जी अम्बे मां जी तेरे भक्त खड़े दर आगे
आगे जी छैने छनछन छनछन छनछन बाजन लागे
आदि भवानी मां ने भक्तों को है तारा रे।
चन्ड मुन्ड राक्षस मैछा सुर को मारा रे।
बनी चंडका माई थी, राक्षस फौज भगाई थी।
शक्ति जी शक्ति तेरे आगे भैरों नाथ जैसे भागे।
भागे जो प्रेमी धन्नधन्न धन्नधन्न धन्नधन्न कैहने लागे
आसता आसता गुफा में भक्त जाते हैं।
दर्शन करके प्रेमी मन मांगा फल पाता हैं।
सभकी आस पुहेचाती मां, सभ की प्यास मिटाती मां
माथे पे टीके जी गले में सज्जते मौली के धागे
धागे जीं सेवक जय जय जय जय जय जय बोलन लागे

प्रेम की भेटा।

तरज—कांची रे कांची [हरे रामा हरे कृष्णा]

सांची रे सांची माँ मेरी सांची
पूजा करूं हाथ जोड़ के
सांचा रे सांचा दवार मां का सांचा
शरधा के फूल लाऊ तोड़ के
तेरे दवारे मैं तो हूं आया मय्या।
प्रेम की भेटां हूं लाया मय्या।
असू का महीना नैहचा मैंने कीना
आया हूं मैं सारा जग छोड़ के
सांची रे सांची मां मेरी सांची—
क्या मय्या जी प्रेम मेरा सच्चा नहीं
क्या मय्या जी आपका मैं बच्चा नहीं
मुझे अपना लो चरनी लगा लो
ना तरसाओ मां विछोड़ के
सांची रे सांची मां मेरी सांची—
तेरे नाम में हैं चोला रंग लिया
नाम दान मां तेरे से मंग लिया
दास का है कैहना सेवा में है रैहना
दुवार से ना खाली भेजो मोड़के
सांची रे सांची मां मेरी सांची—

दुर्गा प्रचार

तरज-दम मारो दम [हरे रामा हरे कृष्णा]

दास मां के हम, कैहते हर दम
जपो सुबह शायम साचा मय्या जी का नाम।
शुभ काम हमने किया क्या।
जीवन का फल है लिया क्या।
आगे जो हमको मिलेगा
हाथों से दान दिया क्या
दास मां के हम.....
मान जन्म हाथ आए ना।
खाली जाना साथ लाऐ ना।
कुछ नेकी के काम कमालो
ब्रथा आयु बीत जाऐ ना
दास मां के हम......
जिस जिस ने मां को धयाया।
जीवन को सफल बनाया।
ध्यानू ने रुतवा है पाया।
दुर्गा सिह यश गाया
दास मां के हम...

दुवारा तेरा दुवारा

तरज—वादा तेरा वादा [दुशमन]

मेरे को आप बख्शो मां भरा हूं लाख भूलों से
जो तुझ से ज्ञान मिलता है नहीं मिलता स्वालों से

0 0 0

मैं मां दीदार करूं, मैं नमस्कार करूं
जन्म सुधार करू, मां तेरा प्रचार करूं
सच्चा है तेरा दुवारा, दुवारा तेरा दुवारा
दुवारे पे तेरे आ ही गया, बच्चा हूं तेरा प्यारा
दुवारा तेरा दुवारा, दुवारा तेरा दुवारा

तुमरी जोत है जो ज्ञान प्रकाश है मां
तुमारी बान गंगा पापों का नाश है मां
तेरा उपदेश मय्या हमें कुछ याद नहीं
यह मानस जन्म मिलना मरन के बाद नहीं
धर्म उपकार का मां कीया कुछ काम नहीं
लिया मैं जिन्दगी में तुमारा नाम नहीं

मुझे मां माफ करदो जगत की मात हो तुम
अमर है नाम दुर्गा जीवन हयात हो तुम

मैं लाख गलतीओं से ऊमर ऐसे बताई
मैं पांच डाकूओं को है पूंजी सब लुटाई

मार्ग को हम तो भुल गए, तेरा ही मां सहारा
दुवारा तेरा दुवारा, दुवारा तेरा दुवारा ।

मय्या पहिचानती हों जगत को जानती हो
पापी को मारती हो भक्त को मानती हो

तीन लोक में मां करती राज है तूं
दुष्ट को खतम करती भक्त की लाज़ है तूं

आप हो जगत जननी अम्बका महां माई
कभी बन रूप चण्डी असुरों से की लड़ाई

रक्त बीज मारा मैशा सुर मार दीना
चण्ड अर मुंड को भी पलक में खतम कीना

जोत है एक तेरी चाहे है रूप कोई
चाहे निर्धन है कोई चाहे है भूप कोई

सभी हैं मय्या [सेवक] तेरे जगत है तेरा सारा
दुवारा तेरा दुवारा दुवारा तेरा दुवारा

मां दी ममता

तरज–लोक गीत

अम्मा देखो बच्चे ताईं किस तरां है पाल दी
आप खावे पिछों पैहले बच्चे नूं खुवाल दी
अम्मा भावें किनी तंग होवे जां लाचार जी
बच्चे दा पियार कदी देवे ना विसार जी
उठ नहीं सकदी एह मंजे उतों दो कदम
अैना दुख सैहके फिर वी बच्चे नूं संभालदी। अम्मा०
टटी ते पिशाब नाल करे गिल्ली थां ज़ी
सुके थां ते बच्चा सवें गिले थां ते मां जी
दिल ना संगावे कदी अंबड़ी दा रती जिना
अैनी सेवा कर के ते घालना है घालदी। अम्मा०
बच्चा कदी जरा जिना दिसदा ए तंग जी
मापियां दा उसे वेले उड जांदा रंग जी
खान पोन सुजदा ना अम्बड़ी नूं रती जिना
उसे वेले डाकटर हकीम फिरे भालदी। अम्मा०
मात पिता वाली नेकी कदी ना भुलाईए जी
सेवा कर असीं चंगा जीवन बनाईए जी
शिगार सिंह जगत दिखालिया ई जिस अम्मी
लबेगी ना कदी फेर अम्मा उदे नाल दी। अम्मा०

दर्शन की प्यास

तरज—आखो आखों में बात होने दो (आखों आखों में)

शेरां वाली मय्या मुझे दर्शन दो।
मुझे जरा चरनों को पर्सन दो।

आया दूर से मैं दर्श लिए
दर्स बिन बच्चे को ना तरसन दो

दरस बिना मन डोले, मां दे दे ठंडे झोले
दास तेरे दर आके मां, जय जय तेरी बोले

आओ मात प्यारी हो शेरों की सवारी।
हरदय मेरा खुशीयों से हरसन दो।

शेरां वाली मय्या मुझे दरसन दो। मुझे ......

सब कुछ तूने दिया बस और कोई नहीं आसा
सिरफ मय्या जी तेरे हूं दरसन का ही प्यासा

जलदी आजा अम्बा, मां जग जननी जगदम्बा

आंसू मेरे ना दीद बिन बरसन दो।
शेरां वाली मय्या मुझे दर्सन दो।

भारत का मैं वासी हूं

तरज़--रामपुर का बासी हूं [रामपुर का लक्षमन]

भारत का मैं वासी हूं ;सेवक मेरा नाम
माता जी की भेंटें लिखना यही हमारा काम
दर मय्या का सुहेला भक्तों का है यहां मेला
शरधा से चरणों में झुकना है भाई ॥
भक्त जनों की आस पुचाती है माई ॥
लाखों भक्त मेरी मय्या ने तारे
शरधा का फल मिलता प्यारे
तुम देखोगे जब जोती को
मैं साफ कहूं वोहे शुभ वेला। भारत......
चार दिनों का मेला यह जग है सुपना ॥
मतलब की सभ दुनियां कोई नहीं है अपना ॥
सांचे भक्तों का मुकदर जागा है
जिसका हिरदा पाप कपट से भागा है
धर्म अर्थ में माईआ खरचो
साथ ना जाना धेला। भारत..........

दवारे तेरे मय्या जी

भेंट तर्ज—दो तिन चार असीं पंज नी भरा

दवारे तेरे मय्या जी सेवक गए आ
भक्तां नूं मय्या जी तूं दरस दिखा
तेरी मैहिमा रहेगा, तेरी मैहिमा रहेगा।
कैंहदे हैन दास साडी आस मां पुजा।
बचड़े दा खैर साडी झोली विच पा।
तेरी महिमा रहेगा तेरी महिमा रहेगा।
इहो अरदास साडी करो मंजूर मां॥
फेर वी दवारे तेरे आवांगे ज़रूर मां॥
धूड़ीं तेरे चर्णां दी मथे लईए ला।
तेरी महिमा रहेगा तेरी महिमा रहेगा।
शेरां वालो असी हां सुवाली तेरे दर दे।
सेवकां दी माता जी तूं आशा पूरी कर दे।
लखी दुनियां दी दिती आस तूं पूज़ा।
तेरी महिमा रहेगा तेरी महिमा रहेगा।
सानूं माता ईको तेरे नाम दा सहारा ए।
ारे दर छडे तेरा मलिया दवारा ए।
कहै प्रवाना साडी चिन्ता हटा।
तेरी महिमा रहेगा, तेरी महिमा रहेगा।

ध्यानूं भक्त

मेंट तर्ज–में कहीं कवी ना बन जाऊं [प्यार ही प्यार]

तुझ को पुकारे ध्यानु आ जलदी मेरी मय्या
अकबर ने घोड़ा काटा घोड़े को मां ज़िवाओ
पापी से आज मय्या आ कर मुझे बचाओ।
लाई क्यों देर इतनी शक्ति मय्या जी आओ

तुझको पुकारे ध्यानु आ जलदी मेरी मय्या।
जालिम ना एक माने कैसे ऊसे मनाऊं
तेरे सिवा में मय्या अब किस के पास जाऊं
जलदी से आओ अम्बे तेरे ही गीत गाऊं

तुझको पुकारे ध्यानु आ जलदी मेरी मय्या
(सेवक) की देखी भक्ति शक्ति जी पल में आए
ध्यानू का काटा घोड़ा मय्या जी दिया उठाए

फिर क्यों ना प्रवाना' मय्या के गीत गाए
तुझको पुकारे ध्यानु आ जलदी मेरी मय्या।

रल प्रेमी सारें बोलो

भेट तरज—मेरी सखीरी बोलो

रल प्रेमी सारे बोलो जरा मुखड़ा तो खोलो
अब मिल कर मय्या के जयकारे मैं भक्तो
मां का सतकार कर ले।
आओ जी हाथ जोड़ के, और मन पापों से मोड़ के
हम मय्या राणी की आरती गा लें अर मां का प्रचार करले
देखो कितना सुहाए पर्बत में शक्ति मां का येह मन्दिर।
मन्दिर में गुफ़ा है प्यारी 2 और जल बैहता है गुफा के अंदर
प्रेमी दवारे पै जाते भेंट चड़ाते शक्ति मय्या को
दर्शन पाते हैं सीस झुकाते शक्ति मय्या को
अब हम भी दवारे जा के और सीस झुका के
ऊस शक्ति मय्या का शर्धा से भक्तो मिलके दीदार करलें
दर्शन मैया के पा कर भेंट चड़ाकर लाएंगे नाहरा
भवन मय्या का प्यारा चमके मां तारा जग का सहारा
दुर्गा चरणी लगाती आस पहुंचाती जो भी है जाता
ऊस अम्बे मां की ज़ोत जगाकर महिमा जो गाता
[प्रवाना] कैहता आओ अम्बा की महिमा गाओ
चरणों में बैहकर मां से हो प्यार करले।

अब गा लें मईया के गीत

भेट तरज- आजा तुझको पुकारे मेरे गीत रे [गीत]

मेरे मनवा मेरे मीत रे
अब गा ले मय्या के गीत रे
बेली भी झूठे यार भी झूठे
भाई भैणों के प्यार भी झूठे

येह जो नारी सब सन्सारी
पैसों से सबको प्रीत रे
अब गा ले मय्या के गीत रे
मेरे मनुवां मेरे गीत रे।

सब से सांचा मां का दवारा
पुज रिहा जिसको जग सारा
बन प्रवाना जे दरस को पाना।
तेरा जीवन ना जाए बीत रे।

अब गा ले मय्या के गीत रे
मेरे मनवा मेरे मीत रे।

माता दी चिठी

भेट तर्ज—चन्न चमके ते मथा पिया दमके

सोहणा मन्दिर मय्या दा चमके
रल संगतां दरस नूं आईयां
माता दुर्गा ने चिठीयां सी पाईयां
असू दा महीना आइया मौसम बहार दा
जगत सुवाली शेरां वाली दे दवार दा
मां दा भवन रंगीला, जिथे नाम वाली लीला
रल भक्तां ने भेटां गाईयां
माता दुर्गा ने चिठीयां सी प इयां
जग मग माता जी दी जोत पई जगदी
मूरती प्यारी मां दी भक्तां नूं लगदी
सचा मां दा दवारा, जिहनूं पूजे जग सारा
दवारे वजदे ने ढोलक शहिनाईयां
माता दुर्गा ने चिठीयां सी पाईयां
शेर दी सवारी मां दे गल चोला लाल जी
भक्तां दे पूरे द ती करदी सुवाल जी
आए सेवक, प्यारे, चल मां दे दवारे।
मां ने सब दीयां आशां पुजाईयां।
माता दुर्गा ने चिठीयां सी पाईयां।

ऊचीयाँ पहाड़ाँ दीयां ढकीयां

भेट तरज–चिटीयां कपाह दीयां फुटीयां

ऊंचीआं पहाड़ां दीयां ढकीयां ।
बरश सब हरे हरे
माता जी दा भवन निराला
ते भागां वाला दरस करे।
औथे जग मग जोत पई जगदी
ओहदीं शेर दी सवारी प्यारी लगदी
शरन लग सेवक तरे।
माता जी दा भवन निराला।
ते भागां वाला दरस करे।
नेहचा नाल जेहड़ा करे अरदास जी
इक साल विच पूरी हुन्दी आस जी
भक्त जांदे वरे दे वरे।
मा ा जी दा भवन निराला।
ते भागां वाला दरस करे
पई 'सेवकां' नूं करदो निहाल मां
देंदी मावां दीयां गोदीयां 'च लाल मां
माया दे खजाने भरे
माता जी दा भवन निराला
ते भागां वाला दरस करे।

ध्यानू भक्त की पुकार

भेट तरज—मौसम है आशकाना [पाकीजा]

सेवक है अन्जाना
ध्यानू कहे मां दुर्गा जलदी से पास आना
अकबर ने घोड़ा काटा किऊं देर कर रहे मां
इसमें है लाज तेरी ध्यानू यही कहे मां
डर लग रहा है मुझको पापी से मां बचाना
धयानू कहे मां दुर्गा जलदी से पास आना
घोड़े के साथ कैहता अब जान तेरी जाए
शक्ती है तेरी मय्या फ़िर देर क्यों लगाए
जे आई ना भवानी क्या कहेगा जमाना
धयानू कहे मां दुर्गा जलदी से पास आना
सुनली पुकार दुर्गा सिह चड़के पल में आई
घोड़े को कीया जिन्दा भक्तों की मां सहाई
अकबर ने जलवा देखा कैहता है प्रवाना
धयानू कहे माँ दुर्गा जलदी से पास आना

मेरीमाँ का भक्तों को सहार

वलों कवि प्रीतम सिह प्रवाना

सपुत्र कवि दुर्गा सिह प्यास का

भेट तरज–मैंने देखा तूने देखा [दुश्मन]

मैंने देखा, तूने देखा, इसने देखा, ऊसने देखा
सबने देखा क्या देखा क्या देखा
पर्बत में शक्ती का दवारा है
मेरी मां का भक्तों को सहारा है
जग मग जोतें जगती है जी मन्दिर में उजाला
भवन सुनैहरी अम्बा जी का सारे जग से आला
प्रेमो दवार मय्या के जाते, चरनों में सीस झुकाते
भेटा है मय्या की गाते जी गाते । मैंने देखा–
मन्दिर चमके जैसे गगन का तारा है।
मेरी मां का भक्तों को सहारा है।
झिम झिम रिम झिम बादल बरसे मौसम है झूलों को
मां के गले में सजती है जी माला जो फूलों की
जगदम्बे आदि भवानी, भगतों ने शक्ती मानी
मां का जग में कोइ ना सानी न सानी मैंने देखा–

प्रवाना कहे दरसन का नजारा है
मेरी मां का भक्तों को सहारा है

शेरां वाली मय्या

भेंट तरज : मेरे दोसत तुझे मेरे गीत मुबारक

शेरां वाली मय्या दास आए दुवारे
लाए भेटां मय्या प्रेमी भक्त प्यारे
तेरे मां दर्शन को आई संगत रली
भेंट हैं लिआए तोड़ फुलों की कली
भक्तों की मन्डली है भेटें गा रही
जय कारों से गूंजे तेरे भवन की गली
हाथ झण्डे मय्या जिसमें जड़त सितारे
शेरां वाली मय्या दास आए दुवारे। लाए...
भक्तों को आप का सहारा मय्या
दास का चमकादो सितारा मय्या
[प्रवाना] कैहता है जोती का
दर्शन का दिखादो नजारा मय्या
शेरां वाली मय्या दास आए दुवारे
लाए भेटा मय्या प्रेमी भक्त प्यारे

भेंट तरज—दो दिवाने आए [तांगेवाला]

जो सेवक बन जाए, मां को सीस झुकाए
शेरां वाली शक्ती उसके मन की आस पहुंचाए
येहे मेरी सांची बात है येही, के तुम भी भेंट चड़ालो
भवानी के गुन गा लो। जो सेवक बन जाए
आओ प्रेमी प्यारे मां दुर्गा जी के दुवारे।
नाम है वैष्णों राणी मन्दिर पर्वत में मशहूर।
भगतों की रशपालक, मां त्रई लोकी की मालक
निसचा से जो जाता झोली कर देती भरपूर
मां को बसालो मन मंदर में, जोत जगालो मन मंदर में
दर्शन पा लो मन मंदर में
आओ नैहचाधार भवानी भगतों को अपनाए। जो...
भक्त जनों को तारे, मां राक्षस पापी मारे
शेरों पे सवारी मां के गल फुलों के हार
दरशन का नजारा, हैं मन्दिर प्यारा प्यारा
भक्त प्यारे शक्ती जी की बोलें जय जय कार
आदि भवानी मां अम्बा की, वैष्णों राणी मां अम्बा की
अमर कहानी मां अम्बा की, जोती का प्रवाना
सभ येह भेटों में समझाये। जो सेवक...

चल्ल चल्ल चल्ल माँके प्यारे

भेट तरज -चल चल चल मेरे साथी [हाथी मेरे साथी]

चल्ल चल्ल चल्ल मां के प्यारे ओह मां के द्वारे
चल्ल मां का जय कारा बोल के
हो तयार ले प्रचार, दाती के कर दिदार। चल्ल...
जग की जननी है ओ, गुफा में बैठी है जो
देती है वरदान मां, मन में तमन्ना जो हों
दरस पाए. तर जाए
बैहता चर्णों में गंगा का जल। चल्ल...
अम्बा का दरबार है, पूजता संसार है
झूठा है सारा जहा, सच्चा मां का प्यार है
यारा लगता, चल्ल भक्ता
रा जीवन जाएगा बदल। चल्ल...
ग मग जोती जगे, भक्तों को प्यारी लगे
ती है दर्शन मां बैठे हैं [सेवक] अगे
रस पाले, गुन गाले।
रा मौका ना जाए निकल । चल्ल...

असू आया है मौसम सुहाना

भेंट तरज–जिदगी इक सफर हैं सुहाना [अंदाज]

असू आया है मौसम सुहाना
मां के दवारे सब भक्तों ने जाना
परबतों के नकशे नयारे हैं वहां
रासते में देख लो नजारे है वहां
मय्या राणी जी का सुन्दर ठिकाना
मां के दवारे सब भक्तों ने जाना
शरधा से भेंट झड़ाना जाकर
दर्शन मय्या जी का पाना जाकर
मां के चरणों पै सीस झुकाना
मां के दवारे सब भक्तों ने जाना
निसचा से जाता है जो मय्या जी के दर
सेवकों की खाली झोली देती है मां भर
सच कैहता है जी [प्रवाना]
मां के दवारे सब भक्तों ने जाना।

भक्त बाबा जित्तो मल जी

भेट तरज लोक गीत

जिने माता ज़ी दे दर्शन पाए
भगत बाबा जितो मल जी ॥
रोम रोम विच शेरां वाली नूं वसा लिया
भक्ति दे नाल वर शक्ति तों पा लिया
माता वैष्णों ने दरस दिखाऐ
भगत बाबा जितो मल जी ॥
जिने माता जी दे दरशन पाए
माता किहा पूजे जेहड़ा तेरा सथान जी
दुख दूर होन मिले धंन संतान जी
कते पुनियां नूं सीस जो निवाए
भगत बाबा जितो मल जी
जिने माता जी दे दरशन पाए
बुवा दाती सेवकां दे कारज सुवारदी
लिखी नहीं जांदी शोभा बाबे दे दवार दो
लखाँ भगताँ ने लंगर लगाए
भगत बाबा जितो मल जी

बावे वाली माता

भेट तरज.. लोक गीत

तेरा नित नित दरशन पाईए
धंन माता बावे वाली ए
भवन तेरा है जम्मू तवी दे किनारे मां
किले विच मंदरां दे खूब ने नजारे मां
मथा टेकीए ते शिलीयां झड़ाइए
धंन माता बावे वाली ऐ । तेरा...
नेहचा वालियां दे दूर कर देंदी दुख मां
दुध पुत धन देंदी सेवकां नूं सुख मां
धूड़ चर्णा दी मथे उते लाइ ऐ
धन माता बावे वाली ए । तेरा...
भगतां ते सेवकां दी पूरी हुन्दी आस मां
तेरी महिमा लिखदा है दुर्गा सिंह प्यास मां
हथ जोड़ के ते भुल बखशाइऐ
धंन माता बांवे वाली ऐ । तेरा...

आँवाँगे हर साल

आंवांगे, आंवांगे हर साल माई तेरे आवांगे
नारयल भेटा छतर लयाई ए ॥
आरती वेले जोत जगाई ए ॥
झन्डा चड़ाईए लाल माई तेरे आवांगे
आवांगे, आवाँगे हर साल माई तेरे आवांगे ।1।

मावां हुन्दीआं ठंडीआं छावां ॥
पुत्र भुले नहीं भुलदीआं मावां ॥
साडा करीं ख्याल माई तेरे आवांगे ।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे ।2।
होंर कोई नहीं थोंड़ है दाती ॥
इको चीज़ दी लोड़ है दाती ॥
जे तूं बख़शें बाल माई तेरे आवांगे ।
आवांगे आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे ।3।
बाल बच्चे विच सुख वरतावीं ॥
त्रशणा भुख प्यास मिटावीं ॥
टबर लियाईए नाल माई तेरे आवांगे ।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांग ।4।

सुख शान्ती बुध्द दई मां ॥
बच्चयां नूं तूं दुध्द दईं मां ॥
पूरे करीं सवाल माई तेरे आवांगे।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे।5।

बच्चे साडे पास करादे ॥
धर्म, शर्म शुभ कर्म सिखादे ॥
खोटे मिटन ख्याल माई तेरे आवांगे।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे।6।

धर्म अर्थ विच माया लाईए ॥
कन्या पूजन यज्ञ कराईए।
खुला देओ धन माल माई तेरे आवांगे।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे।7।

दुर्गा सिह दी एह है चाहना ॥
सिरफ माई तेरा दर्शन पाना ॥
रख चरनां दे नाल माई तेरे आवांगे।
आवांगे, आवांगे हर साल माई तेरे आवांगे।8।

जय कारा भवनां वाली दा बोल सच्चे दरबार की जय।

पूजा करे सन्सार

भेंट तरज—कीरतत सारी संगत

पूजा करे सन्सार मां तेरी पूजा करे।
तैनूं पूजन बैरह्मा जी आए।
गायत्री जो नूं नाल लयाए।
बोलन जय जय कार माँ तेरी पूजा करे।
पूजा करे सन्सार मां तेरी पूजा करे।

तैनूं पूजन विशनूं जी आए।
लक्षमी जी नूं नाल लयाए।
लैके फुल्लाँ दे हार मां तेरी पूजा करे।
पूजा करे सन्सार मां तेरी पूजा करे।

तैनूं पूजन शिव जी आए।
पारबती जी नूं नाल लयाए।
होके बोल सवार मां तेरी पूजा करे।
पूजा करे सन्सार मां तेरी पूजा करे।

तैनूं पूजन राम जी आए।
सीता जी नूं नाल लयाए।
दुर्गा सिंह बलहार मां तेरी पूजा करे।

माता दी चिठी

चिठी माता दे मन्दिर तों आई खोल के पड़ा लै भक्ता।
तैनूं याद करे महां माई दर्शन पा लै भक्ता।

असू दे नराते रुत दर्शनां दी आई ए।
छेती छेती आ जा बेटा देर क्यों लगाई ए।

तेरे मन दीआं आसां पुज़ावां भेटाँ झड़ा लै भक्ता।

शेराँ वाली क़ैंहदी मेरा खुल्ला दरबार ए।
भक्तां ते सेवकां दा मैंनूं इंतजार ए।

तैनूं दाती ने आप बुलाआ मंगे फल पा लै भक्ता।

वैशनूं है नाम मेरा गाम दरबार है
जम्मू ज़िला डाकखाना कटड़े विचकार है

भाड़ा पन्ज़ है पन्ज़ां नूं विचों कढके टिक्ट कटा लै भक्ता।

मैं ही तेरे घर बूटे पुत्रां दे लाए ने
मैं ही धन दे के तेरे महल बनवाए ने

दुर्गा सिंह हुण पूज़ा मेरी करके ज़ीवन बना लै भक्ता।

दर्शन की प्यास

भेंट तरज—कौण जाने बाबा दुनियां [जवानी की हवा]

हम आए दूर से दर्शन दिखा दो दुर्गा माई।
शरधा प्रेम भावना लेकर दवार तेरे पर आए।
हम ने सुना है दुर्गा मईया सब की आस पहुंचाए।
धयानूं जैसे भक्तों की है तूं ने लाज बचाई।
हम आए दूर से दर्शन दिखा दो दुर्गा माई।
तेरी जोत में शक्ती मईया कैहते ब्रहम ज्ञानी।
हार गए हैं आप के आगे अकबर से अभिमानी।
तवे फाड़ कर लाटें निकली ऐसीं कला दिखाई।
हम आऐ दूर से दर्शन दिखा दो दुर्गा माई।
चन्ड मुन्ड और रक्त बीज मैछासुर दैंत को मारा
चार कूट में महिमा तेरी जान रहा जग सारा।
जो निश्चय से दवार पे आया उस की 'प्यास' मिटाई।
हम आऐ दूर से दर्शन दिखा दो दुर्गा माई।

माता जी दे पवित्र टप्पे

दो पत्र अनारां दे
भागां वाले दर्शन करदे मां तेरे दरबारां दे
बागां विच केले ने
माता जी दे मन्दिरां ते भक्तां दे मेले ने
ओहदी शेर सवारी ऐ
लाल लाल चोला माता दा उते सजदी कनारी ए
पर्बत दे नजारे ने
माता जी दे दर्शन नूं आए भक्त प्यारे ने
माता दरस दिखांदी ए
अपने भक्तां दी माता आस पुजांदी ए।
दर्शन नूं दिल तरसे
माता तेरे मन्दिरां ते शरधा दे फुल बरसे
सानूं दरस दिखा दाती
अपने खजाने चों खैर बचड़े दा पा दाती
असीं फेर वी आवांगे
आसां पूजा माता तैनूं छत्र चड़ावांगे।
साडी नीयत साफ करीं
अपने 'सेवक' नूं मां भुल्ल चुक माफ करीं।

माँ का दरस पावना

भेंट तरज—जिस गली में तेरा [कटी पतंग]

जिस प्रेमी ने मां का दरस पावना
पाप ऊस ने तो हरगिज करना नहीं।
करना ऊसको सदा सतसंग चाहीए।
खोटी संगत में तो पांव धरना नहीं।
जिन्दगी में जपो राम के नाम को।
शुभ कर्म करो नेकी के काम को।
मिठा बोलो खरचना नहीं दाम को।
करता झूठे अडम्बर के अभिमान को
जैसे दुनियां से तूंने तो मरना नहीं॥ जिस.........
नाते झूठे से मोह जाल को तोड़कर
पांच ततों से इस मन को मोड़कर
प्रीती माता के चरनों से तुम जोड़कर
जब तक तुझे ज्ञान होता नहीं
तेरी भुखी त्रिशना ने भरना नहीं। जिस..... ......
चोला मानस का फिर हाथ आना नहीं
इस जीवन को बिरथा गवाना नहीं
बार बार जन्म तूंने पाना नहीं
भया नया बिना मय्या के नाम की
भव सागर से तूंने तों तरना नहीं। जिस...........

दरस का अजब नज़ारा

भेंट तरज़-पलट पलट मेरी जान [आन मिलो सजना

अजब अजब असथान, निराली शान
दरस का अजब नज़ारा

शेरां वाली मय्या जी का भवन प्यारा
गगन का है तारा पूजे जग सारा

आया है सुहाना मौसम मां के दर पे जाने का
मन में है अराधा मां के दर्शन पाने का
वेला ये सुहाना मां के भजन गाने का
अजब अज़ब अस्थान............

मय्या जी के दवारे जो कोई भक्त बनके जाएगा
शरधा से दवारे मां के सीस जो झुकाएगा
अम्बे आदि भवानी के वोह दरस पाएगा
अज़ब अज़ब अस्थान ...

मन्दिर है निराला जिसकी शोभा न्यारी है
गुफा में है रैहती दुर्गा सिह सवारी है
ज़ग मग जोती जग रही लग रही प्यारी प्यारी है
अज़ब अज़ब अस्थान......

अम्बा मां की कहानियाँ

भेंट तरज़—हाए शरमाऊं [मेरा गांव मेरा देश]

गीत ए गाऊं मां की महिमा मैं बताऊं
आओ सब को सुनाऊं भक्तों अम्बा मां की कहानियां
शक्ति मय्या की शक्ति मय्या की सुन लो नशानियां
सुन लो नशानी झुले झन्डे लासानी
वहां गुफा सुहानी जिस में रहती भवानी
गुफा में जोत जगाई वैशनों माई
ते मूरती सुहानिआं, गीत ए गाऊं.........

चोला है नयारा, मुकट मारे चमकारा
बाही चूड़ा है प्यारा, जड़िया हीरों से सारा
मय्या कीं शेर सवारी लगे प्यारी
ते गल में है गानिआं, गीत ए गाऊं........

भक्तों को तारे, छिन में दुषटों को मारे
जो भी जाते हैं दवारे, कैहते मय्या को सारे
कैहते हैं चरनी लगाना में प्रवाना
मेरी महाँ रानिआं; गीत ए गाऊं.....

मय्या जी की जय जय कार

भेंट तरज़–जहां वहां सारे जहां में तेरा राज है
शेरां वाली मय्या का त्रबत में राज है
हो रही वहां मय्या जी की जय जय कार ॥

सुन्दर सुनैहरी सीस पर ताज है
हो रही वहां मय्या जी की जय जय कार ॥

पर्बतों के नकशे नयारे, नकशे नयारे है नज़ारे
भेटा गाते हां हां गाते प्रेमी सारे
हो रहे जगराते आती गूंजती अवाज़ है
हो रही वहां मय्या जी की जय जय कार ॥

भवन मय्या जी का प्यारा, बेसहारों का सहारा
चमके ऐसे हां हां ऐसे जैसे गगन का तारा
मय्या पुरे भक्तों के कर देती काज है
हो रही वहां मय्या जी की जय जय कार

गाले मय्या का तराना, दरस जे मय्या का पाना
बन जा जोती का हाँ हाँ जोती का तूं प्रवाना
चल द्वारे तूं भी दिन खुशियों का आज है
हो रही वहां मय्या जी की जय जय कार ॥

भवन मय्या दा चंगा

तरज—इक पल बई जाना......

भवन मय्या, भवन मय्या दा चंगा,
ते चरणां विच पई, चरणां विच पई वगदी गंगा।
ते जोतां जगदीयां ॥ 2 ॥
मय्या नूं पूजे सब सन्सार।
झण्डे झूल रहे, दर्बार।
भवन पर हो रही जी
भवन पर हो रही जय जय कार॥ जोतां......

मां दी सुन्दर गुफा निराली।
जिस विच रहिंदी ए,
जिस विच रहिंदी ए शेरां वाली
जिस दे दर दा जी
जिस दे दर दा जगत सवाली॥ जोतां......
माता पूरी करदो आस।
बिरथा जांदी नहीं,
बिरथा जांदी नहीं अरदास।
कहिंदा 'दुर्गा सिंह',
कहिंदा दुर्गा सिंह प्यास ॥ जोतां......

माँ शेरां वाली है

भेट तरज—मिलो ना तुम ते हम घबराए [हीर रांझा]

भक्त प्यारे आऐ, सारे मां की महिमा गाए
मां शेरां वाली है।

सभी को दरस दिखाए शक्ती सभो की आस पुचाऐ
मां शेरां वाली है।

सुनो मां के प्रेमीयों भेजी है चिठी मां ने प्यार की
करली तयारीं हम ने जलदी से मय्या के दवार की
मां की शरनी जो भी जाए मां उसको अपनाए
मां शेरां वाली है।

दुर्गा भवानी जी के दरपे जो निसचे से जाएगा
अम्बे राज राणी जी के दरपे जो सीस झुकाएगा
जो कोई भेंट झड़ाए मय्या जी ऊसकी प्यास मिटाए
मां शेरां वाली है

प्रबत में मय्या जी का भवन अती ही कमाल जी
देखे दवारे पे झंडे जो झूले लाल लाल जी
प्रवाना येह गीत सुणाए दरस पा खुशी मनाए
मां शेरां वाली है।

माँ के सेवक

भेट तर्ज–जाने किया लोग मुहब्बत किया करते हैं

मां के सेवक मां का दर्शन किया करते हैं
नाम लेकर भवानी का जिया करते हैं
अम्बे मय्या आगे फरयाद करते हैं।
प्रेमीं मया को हर वक्त ही याद करते हैं।
एहे सचे सेवक जो पापों से डरते हैं।
बन करके पुजारी मया की पूजा करते हैं।
जोत जगाकर आरती गा कर
मां को धिआ कर भोग लगा कर
भोंग मां दुर्गा का फिर सभको दिया करते हैं।
मां के सेवक मां का दर्शन किया करते हैं। नाम........
शक्ति में शक्ति है भक्तों की भक्ति है
दवारे भवानी के जी सांची जोत जगती है
जो-दरस पाता है, वोह तर जाता है
दिन रात मया के वोह हरदम गीत गाता है
जोत को माना, बनके प्रवाना, पास रेहता है
मां के चरणों की चरणामत पिया करते है
मां के सेवक मां का दर्शन किया करते है। नाम.......

तेरे सहारे माँ

भेंट तरज—सारे जमाने पे [आप आए बहार आई]

तेरे सहारे मां, प्रेमी प्यारे मां
आए दुवार मां चढ़ कर झड़ाई
दूरों आए महां माई ॥ तेरे000

बच्चों का मय्या से है प्यार
चाहते हैं मय्या जी आप का दिदार
भवानी महारारी कहानी
बड़ो ने बचों ने भी मिलकर गाई। दूरों000

मेरी दुर्गे मां जपें तेरा नाम
चरणों में रहेंगे पूजेंगे सुभा शाम
पुकारे मां सारे दुवारे आ शकती तूं आ शकती
अब हो जाओ सहाई। दूरों000

आओ मय्या जी न भुलेंगे हिसान
हमको देदो ज्ञान मां हम है निधान
दिवाना मसताना परवाना जगदम्बे मां अम्बे
कैहता आओ कयौं देर लाई। दूरो000

भक्ता जय माता दी बोल

भेट तरज : सखीआ नाम साई दा बोल

जे माता दे दर्शन करने चल चर्णां दे कोल
भक्ता जय माता दी बोल।

माता कैंहदी मन दे अंदर मन्दिर मेरा बना ले
जिस माता ने जंमिआ तैनूं सेवा उहदी कमा ले
हुण ते भक्ता तूं पया औणै मैं आवांगी कोल
मैं आवांगी कोल। भक्ता जय माता दी बोल
छडदे पंजां ततां नूं तूं जेकर दर्शन पौणा
मानस जनम अमोलक तेरा बार बार नहीं औणा
दुनीयां दे झूठे लालच विच
हीरा जनम ना रोल भगता जय माता दी बोल
बालक वसता खेड गवाई कालिओं हो गए बगे
की मूंह लै के जावेंगा तूं धर्म राज दे अगे
दुर्गा सिंह तराजू फड़के
हुण ते पूरा तोल भक्ता जय माता दी बोल

श्री दुर्गा आरती

जय जय श्री महां मईआ जय जय श्री महां मईआ
जो तेरी आरती गावे, जो तेरी आरती गावे
फल ऊसने पाया जय जय श्री महां मईआ
बरहमा विषणू शंकर जाप तेरा करते
मईया । जाप तेरा करते ॥2॥
सूरज करे रसोई सूरज करे रसोई
इन्दर जल भरते ॥ जय जय श्री महां मईआ
शेर सवारी तेरी लग रही है पयारी
मय्या लग रही है पयारी ॥ 2 ॥
विच पहाड़ां वासा विच पहाड़ां वासा
सुन्दर गुफा पयारी ॥ जय जय श्री महां मईया
चंड मुंड मैखासुर राक्षस सभ मारे
मय्या राक्षस सभ मारे ॥2॥
भक्त धयानूं जैसे भक्त धयानूं जैसे
कोट भक्त तारे ॥ जय जय श्री महां मईया
सीस छत्र सोने का शोभा अति पावे
मय्या शोभा अती पावे ॥ 2 ॥
दुर्गा सिंह फल पाता जो दुवारे आवे ॥ जै 0 0

सत्त देवीयां दी भैंट

तर्ज—दों तिन चार असीं पंज नी भरा [रकाट]

चिन्ता गवाऊनीयां ते चिन्त पुरनी जा।
शेरां वाली माता जी दे दर्शन पा।
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
वडी ऐहदी भैण जिनूं आखदे ज्वाला जी।
पर्वतां दे विच सोहणा मन्दिर निराला जी।
लट लट लाटां दे तूं दर्शन पा।
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
चिन्ता गवाऊनीयां ते चिन्त पुरनी जा।
कांगड़े वाली दा बड़ा सुन्दर स्थान है
तारा देवी मन्दिर दी महिमा जो महान है
डिगा ना भूचाल विच रिहा शोभा पा
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
चिता गवाऊनीयां ते चिन्त पुरनी जा।
वैशनों जी माता रैहदी जम्मू कशमीर विच।
गुफा जिदी लम्मी ज ना पैदा ठन्डे नीर विच।
शरधा दी भेट रहे [सेवक] झूड़ा।
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
चिन्ता गवाऊनीयां चित पुरनी जा।

कालो कलकत्ते वाली भक्तां नूं तारदी
पापीयां ते राकशां नूं घड़ी विच मारदी
जंग विच चन्डी देंदी धजीयां ऊड़ा।
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
चिन्ता गवाऊनीयाँ ते चिन्तपुरनी जा।

मनी माजरे है माता मनसा दा मन्दिर
भक्तों दी मनसा पुजावे साल अन्दर
मंगीयां मुरादां ऊथे रहे लोकीं पा
जय जय माता दी बुला,जय जय माता दी बुला
चिंता गवाऊनीयां ते चित पुरनी जा।

नयना देवी भवन दे विच सोहणी पिपली।
सत्तो भैणां पींघां पा के पऊन जिथे किकली।
सौंण दा महीना मोर पैलां रहे पा।
जय जय माता दी बुला, जय जय माता दी बुला।
चिंता गवाऊनीयां ते चित पुरनी जा।

केहड़े केहड़े नाम दसां देवीयां अनेक जी
दुर्गा सिंह कहे जोत सारीयां दी ऐक जी
नेःचा नाल धन्ने लिया पत्थरां चो पा।
जय जय माता दी बुला,जय जय माता दी बुला
चिन्ता गवाऊनीयां ते चित पुरनी जा।

शेराँ वाली मय्या

तरज़–महबूब मेरे [पत्थर के सनम]

शेरां वाली मय्या जोतां वाली मय्या
तेरे दुवार जैसा दर कोई नहीं है।
जो सारी दुनीयां का नज़ारा यही है।
तेरे तो भवन की मां शोभा न्यारी है
सुन्दर तेरी गुफा मां प्यारी प्यारी है
कहीं नैनां देवी तूं है अर ज्वाला कहीं है
शेरां वाली मय्या जोतां वाली मय्या...

श्री वैश्णों मां तेरा दरबार प्यारा है
तेरे ही भगतों का मां तेरा सहारा है
तेरे सुन्दर भवन में तेरी जोतें जग रही है
शेरां वाली मय्या जोतां वाली मय्या...

मैं तेरे दरशन का दिवाना हूं मय्या
मैं तेरी जोती का (प्रवाना) हूं मय्या
यहां याद भगत करे तूं प्रतख वहीं है॥

दुर्गा प्रचार

भेट तर्ज—मिलती है जिन्दगी में मुहब्बत कबी कबी [आंखें

मिलती है सेवकों को भगती कबी कबी
हिरदे में जोत नाम की जगती कबी कबी
हर वकत प्रेमी प्रेम से मय्या का जाप करें
यह प्रीत मां की याद में लगती कबी कबी
मिलती है सेवकों को भगती कबी कबी
जीवन को खोह ना दीजिए पापों के जाल में
मानस का जनम भगवती देती कबी कबी
मिलती है सेवकों को भगती कबी कबी
विशवास लै के पहुंच जा मय्या के द्वार पर
मंदर में दरस देती है शकती कबी कबी
मिलती है सेवकों को भगती कबी कबी
धयानू का घोड़ा काटिआ [सुरजीत] कर दिया
भेटा भगत के सीस की लेती कबी कबी
मिलती है सेवकों को भगती कबी कबी

जय जय बुलाके चलो

भेट तरज–ना मूंह छुपा के जीओ [हमराज]

जय जय बुला के चलो मां के गीत गा के चलो
यह मय्या जी का दरबार है सर झुका के चलो

शरधा प्रेम के बिन मां के दरस नहीं होते
भगत बाबा की मन में जोती जगाके चलो
जय जय बुला के चलो मां के गीत गा के चलो
यह मय्या जी का दवार है सर झुकाके चलो

ना जाने जिन्दगी यह कब तलक रहे ना रहे
यह मानस जनम कों तो सफल बना के चलो
जय जय बुला के चलो मां के गीत गा के चलो
यह मय्या जी का दवार है सर झुका के चलो

नाम दान का तो नाम रह जाएगा यहां
शेरां वाली 'दुरगा' के दरस पा के चलो
जय जय बुला के चलो मां के गीत गा के चलो
यह मय्या जी का दवार है सर झुका के चलो

भेट तरज—सवेरे वाली गाड़ी पे चले जाऐंगे [लाट साहब

शेरां वाली मय्या के दवारे जाऐंगे ॥
जोती को जगाऐंगे । दरशन को पाऐंगे ॥

असू के नराते सोहनी आई है बहार
शेरां वाली मां को भगतों की इन्तजार
जाऐंगे दवारे भेटां को चड़ाऐंगे ॥
जोती को जगाऐंगे । दरशन को पाऐंगे ॥

पाप और कपट को छोड़ के चले
भ्रातां शेरां वाली मां से जोड़ के चले
भजन शेरां वाली मय्या के गाऐंगे
जोती को जगाऐंगे दरशन को पाऐंगे
जो जों भगत दवार पे शरधा से जाऐंगे
मन मांगा फल पाऐंगे

सेवक मय्या के सीस को झुकाऐं शक्ति से
जोती को जगाऐंगे । दरशन को पाऐंगे ॥

अम्बे रानी मय्या

भेट तरज-देखते ही तुझे मेरे मन ने कहा [प्रवार]

अम्बे राणी मय्या मुझे दरस दिखा
तेरी मूरती मय्या पूजता ही रहूं पूजता ही रहूं
आद शक्ति मय्या आस पूरन करो
तेरे चरणों को माँ चूमता ही रहूं चूमता ही रहूं
सब पे अम्बे राणी जी तेरा ध्यान है
आया दवारे तेरे दास अनजान है
तेरे आगे जो करता मय्या मान है
ना राक्ष की बचती कभी जान है
सिंग पर आ जाओ अम्बे राणी मय्या
शेर पर मां तुझे देखता ही रहूं देखता ही रहूं
तेरा दाती जो अजब ही दरबार है
तेरे चरणों से भगतों का मां पयार है
तेरे दवारे पे देखा मय्या आन कर
हर प्रेमी बुला रहा जय कार है
देना सेवक को दरशन मय्या आन कर
तेरे दर पे भजन बोलता ही रहुं बोलता ही रहूं

दर्शन तो मय्या दो

भेट तरज--परदे में रहने दो [शिकार]

दरशन तो मय्या दो दरशन की है चाहना
तेरे जो दरशनों से भगत तर जाएगा ॥
मय्या शेरां वाली मय्या शेरां वाली .....

तेरे तो दवार मय्या आए है
दरशन तो मुझ को दिखाओ मां
खड़े है दवार तेरे मय्या जी
चरनों से मुझ को लगाओ मां ।। दरशन......

तेरा दरबार मय्या प्यारा है
जिसने भगतों को मय्या तारा है
अम्बे मां भगत नेरे आए है
हम को तो आप का सहारा है। दरशन......

दरशन मय्या जी दिखाया है
भगतों ने दरशन को पाया है
बन गया जोती का [प्रवाना]
ां कारा भगत ने बुलाया है। दरशन......

जगदंबे मईया।

वलो कवि—प्रीतम सिंह [प्रवाना]

तरज—इनी लोगों ने छीन लीना दुपटा मेरा [पाकीजा]

तेरा ही मैंने तेरा ही मैंने
तेरा सहारा ले लीना जगदम्बे मईया।
आइआ दुवारे पै दुरगा भवानी
दरस का इरादा मैंने कीना जगदम्बे मईआ
तेरा सहारा ले लीने जगदम्बे मईआ
तेरे भवन पर गूंजे जै कारे
असू का सुहाना महीना जगदम्बे मईआ
तेरा सहारा ले लीना जगदम्बे मईआ
भेटा मैं लाया हूं नारयल सुपारी
शत्र में जड़ के नगीना जगदम्बे मईआ
तेरा सहारा ले लीना जगदम्बे मईआ
जोत तेरी का मां कहे [प्रवाना]
तेरे सहारे मैं ने जीना जगदम्बे मईआ
तेरा सहारा ले लीना जगदम्बे मईआ

तरज—मांगू ना कोई खरैत (ललकार)

आया मैं तो नेहचा धार
बेड़ा कर दो मेरा पार
सच्चा है तेरा दवार अम्बका शेरां वाली

पीछे भूला रहा मां तेरे नाम को
माफ कर दो मुझे बाल ही जान के
झूठी माया के फंदे में था फस गया
अब तो गिरिया तेरे दवार पै आन के
जिद तो मैंने छोड़ दी जब से ठोकर लगी
साचा नाम तेरा दुनीयां में है ठगी
तुझ को सच्च मानिआ अम्बके शेरां वाली
मुझ को दरसन दिखा दो जी मां अम्बका
मन मन्दर में तुझ को बसाऊंगा मैं
हाथ जोड़ मा तेरी मैं पूजा करूं
तेरी जोती को मय्या जगाऊंगा मैं
मैं तो जैसा भी हूं तेरा हूं दास मां
तेरे दरशन को हिरदे में है प्यास मां
मुझ को चरनी लगा लो मां अम्बके शेरां वाली

जा के मया के दर्शन पा

भेंट तरज—जा जा मेरे बचपन

जा जा जा मेरे मनूआ।
जा के मईया के दरशन पा।
यह मानस जनम हीरा।
इसे ऐसे ही ना तूं गवा।
जा जा जा मेरे मनूआ जाके मईया के दर्शन पा

जिन्दगी के कई सास बिरथे गए।
जो भजन के बिना खास बिरथे गए।
जा जा जा मेरे मनूआ जाके मईया के दरशन पा

ईक पल इक घड़ी जप ले हरी हरी।
हरी भजस के बिनां तेरी बाज़ी हरी।
जा जा जा मेरे मनूआ जाके मईया के दर्शन पा

तेरा हिरदा तेरे दिल से बाहर हुआ।
झूठी दुनीयां ने तेरा पयार हुआ।
जा जा जा मेरे मनूआ जाके मईया के दर्शन पा

जवाला जी की भेट

मेंढ तरज—घर हम ने ले लिया है तेरे घर के साहमने

मईया जी आ गया जो तेरे दर के साहमने।
निश्चा का फल अवश मिल गया था धने को।
जब दिल सफा से बैठा था पथर के साहमने।
मईया जी आ गया जो तेरे दर के साहमने।

पानी की नहिर डाल कर जोतों को देखिया।
तो फिर भी जोतें जग पड़ी अकबर के साहमने।
मईया जी आ गया जो तेरे दर के साहमने।

लोहे के तवे जड़ दिये आखर को हारिया।
जोतों को देखिया था जब नजर के साहमने।
मईया जी आ गया जो तेरे दर के साहमने।

लाखों को (प्यास) मिट गई तेरे दरबार से।
अब मैं भी आया हूं तेरे मन्दिर के साहमने।
मईया जी आ गया जो तेरे दर के साहमने।

तूं माँ फूलाँ राणी

तरज—फूलों की राणी बहारों को मलका [आरज़ू]

तूं मां फूलां राणी पहाड़ों में रहती।
जो दर तेरे आया भगत हो गया।
तेरी जोत जगमग है मंदर में जग रही,
दरस जिसने पाया भगत हो गया। तूं मां......

तेरा भवन सुन्दर है दुनियां में आला।
तेरा मईया दरशन है जग्ग से निराला।
तेरे दवार पे जिसने श्रध्दा से आकर,
है सर कों झुकाया भगत हो गया। तूं मां...

कभी शान्ति रूप भगतों को तारें।
कभी पकड़ खंजर तूं दुष्टों को मारें।
अकबर तेरा अन्त लेने को आया,
तूं जलवा दिखाया भगत हो गया। तूं मां.

पहाड़ों को ठन्डक है मौसम सुहानी।
तेरे दर पे आए हैं 'सेवक' भवानी।
तेरा यश भेटां भजन पाठ कीरतन,
है जिस जिस ने गाया भगत हो गया। तूं मां...

मेरा दरस पौरण नूं जी करदा

वलों—कवि जीत सिंह [जखमी]

भेट तरज—मेरा प्यार करन नूं जी करदा

मेरा दरस पौन नूं जी करदा ॥
मेरा दिल तरसे जगदम्बे मां ॥
मैनूं पास बुला लो अम्बे मां ॥
तेरे भवन ते जोतां जग रहीयां ॥
मेरा जोत जगावन नूं जी करदा । मेरा—

तेरा प्रबत विच निवास मय्या ॥
दरशन नूं लोचे दास मय्या ॥
तेरे दर ते मेले लगदे ने
मेरा ओथे आउन नूं जी करदा । मेरा—

चरनां विच गंगा वगदी मां ॥
मैनूं पयारी पयारी लगदी मां ॥
जिथे वगदे ठन्डे फुहारे मां ॥
मेरा ओथे नहावन नूं जी करदा । मेरा...

महाराजा डा. श्री करन सिंह जी का

धन्यवाद

भजन वैष्णों माता दे बंद कीते,
रिशवत खोरियां ते ठेके दारीयाँ ने
सचे सेवकाँ नूं धोखा देन खातर,
झूठा सांग बेनाया मदारीयां ने
पुस्तक माता दे होर ना कोई वेचे,
ठेका ले लिया नवें वपारियां ने
प्रधान साहिब ठाकुर लछमन दास जी नूं
मिलना सोचिया कवि लिखारीयां ने
सदा नन्द ब्रह्मचारी महात्मा जी,
ठाकर साहिब तों हुकम लिखा दिता
जाल माया दा तानियां गया आ
रोड़ा भजन दे विच अटका दिता
हरी भगत जी हरी दे भगत पूरे,
जिना पर उपकार कमा दिता
जम्मू अडा इन्चारज नूं हाल दसो,
चूनी लल दे नाल मिला दिता
चूनी लाल प्यार दे नाल बोले,
पण्डत बांके बिहारी नूं हाल दसो

ओथे जा के अरज सुना दिती,
हल किस तरां होवे सवाल दसो
पंडत बांके बिहारी ने गल दसी,
गल करो खां राज दरबार जा के
हरी भवन बैठा करन सिंह राजा,
महाराज दे करो दिदार जा के
ओह है गल गरीबां दी सुनण वाला,
तुसीं आपणी करो पुकार जा के
ओह है वैष्णों देवी दा भगत पूरा,
आपे कहेगा करो प्रचार जा के
ओथे पहुंचया धर्म प्रचार मंडल,
महाराज जी ने दर्शन दान कीता
हाल बीतिया कुल्ल सुना दिता,
महाराज जी, सुनके ध्यान कीता
तेरां जनवरी सतर संगरांद माघी,
मंगलवार दिन पुन महान कीता
बेचो पुस्तकां माता दे भजन बोलो,
करन सिंह महाराज फरमान कीता
पिया आखदा धर्म प्रचार मंडल,
सूर्य वन्स दा तेज प्रताप होवे
दुर्गा सिंह प्यास अरदास करदा,
राखा आपने देश दा आप होवे

पंज तत

तरज—इक दो तिन असीं पंज नी भरा

इक दो तिन चार पंज ने भरा
ऐहनां कोलों मन मेरे डर रती खा।
कर देन गे तबा।
इक भाई कामी तेरा तेरी मत्त मारदा
काम 'च लिया के तैनूं तेरा सत हैरदा
एहदे नाल बंदिआ प्रेम घट पा
दूजा भाई क्रोध 'च करावे तेरा जंग वे
झगड़े मुकम्दमे कराओन तैनूं नंग वे
ऐहदे कोलों बंदिया ना तैनूं कुछ ला
तीजा भाई लोभी ते करावे तैथों लोभ वे
मानस जनम हीरा रिया तेरा डोब वे
नाम जप बंदिया लै जीवन बना। कर...
चौथा भाई तेरा मोह माया वाला जाल वे
जर जोरू भाई सुत जाणे नहीओं नाल वे
कल्ला ऐथे आईआ है ते कल्ला ऐथों जा। कर...
पंजवां भाई हंकार डोबी तैनूं तत वे
खट लै तूं नेकी जग औणा सहीओ वत वे
शिगार सिंहा अते बुत होऊगा सवा। कर...

मय्या की जै जै बुलाते चलो

दुर्गा की महमा को गाते चलो।
मईया की जय जय बुलाते चलो।
प्रेम से कदम उठाते चलो।

ऊच्चे परबत बिखड़ा मार्ग,
सम्भल सम्भल कर जाना।
दुर्गा मईया खुद ले जाती,
मन में मत घबराना।
श्रदा की जोत जगाते चलो। मय्या की...
बाल गंगा से चर्ण पादका,
आगे आदि कुवारी।
भैरों मन्दिर से भवन देख लो,
माता शेर सवारी।
निश्चा से सीस झुकाते चलो। मय्या की...
बाँके भवन की शान निराली,
लगता प्यारा प्यारा। सुन्दर गुफा में जाकर देखो,
[दुर्गा] जी का दवारा।
दरशन भक्तों पाते चलो। मईया की...

मेरी माँ वैष्णों

तरज—बेदरदी बालमा [आरज़ू]

मेरी मां वैष्णों तुझ को मेरा दिल याद करता है
मुझे दर्शन दिखा दो मां भगत फरयाद करता है
पड़ा है जाल माया का फंसा हूं जगत फंदे में।
है भुला आपका सिमरन पड़ा हूं और धंदे में।
यह बंदन पांच ततों का हमें बरबाद करता है
मेरी मां वैष्णों ..
जगत में पाप का मय्या अंधेरा ही अंधेरा है।
तेरा नाम लेने से यहां होता सवेरा है।
तेरी मां जोत का चानण हमें अबाद करता है।
मेरी मां वैष्णों
दिखादो दास को दर्शन तर्स रहे नैण मय्या जी।
आपके दरस बिन मेरा जीआ बेचैन मय्या जी।
मेरी मां वैष्णों...
मैं भुलनहार सेवक हूं मुझे अब प्यार दो मय्या।
एस संसार सागर से मेरी अब तार दो नय्या।
दुर्गा सिंह सेवक मां तेरा धन्वाद करता है। मेरी...

माँ मेरी शेराँ वाली

वलों सुरजीत सिंह [सेवक]

तरज—कंकरीया मार के जगाया...

दर पै मय्या जो तेरे आया।
शरधा की भेंट लगाया।
मां मेरी शेरां वाली।
भवन तेरा बड़ा है दूर मय्या।
तेरे भक्तों ने जाना है जरूर मय्या
तेरे दर्शन के लाखों सवाली।
मां मेरी शेरां वाली।
अम्बे मय्या श्री जगदम्बे मय्या
तेरा भगत कभी नहीं कम्बे मय्या
तेरी सुन्दर गुफा है निराली।
मां मेरी शेरां वाली।
अरज मेरी मय्या मनजूर करो।
खाली झोली है इसे भरपूर करो।
आपने 'सेवक' को भेजो ना खाली
मां मेरी शेरां वाली।

तेरा संगतां ने दर्शन पावना

तरज–बिल्लो खा लै नाशपातीयां

जी माता बग्गे शेरां वालिऐ,
तेरा भगतां ने दर्शन पौणा।
तेरे भवन दीयां उच्चीयां चड़ाईयां ने
दूरों दूरों संगतां दरशनां नूं आईयां ने
कहिंदे भेटा नूं जा के चड़ावना। जी माता–
सैर जिहड़े करदे ने मोटर ते कार ते
नंगे नंगे पैरीं औंदे मईया तेरे दरबार ते
पलंघां बोलियां दा भोऐं ते वछायोना जी–
पापीयां नूं मारे माता भगतां नूं तारदी
महिमा किवें कहीऐ तेरे सोहने दरबार दी
नाम जपना ते भेटां नूं है गौणा जी...
नेकी खट बंदिया इह बोल है अखीर दा
दुर्गा सिंह बुत तेरा बुलबुला है नीर दा
इहदे नालों पक्का मिटो दा खडायोना॥ जी–

दर्शन मय्या दा

मैं करां साल दे साल दर्शन मय्या दा
सोहणा दर्शन मय्या दा वाह वाह दर्शन मय्या दा
हुंदा जे भागां नाल दर्शन मय्या दा
मां मेरी दा भवन रंगीला विच पहाड़ां सजदा
बाग मय्या दे कोइल बोले शेर जंगल विच गजदा
शेर दी करे सवारी जय हो
लगदी प्यारी प्यारी, जय हो
भगत पए भेट चड़ांदे जय हो
प्रेम नाल दर्शन पांदे जय हो
है सुन्दर भवन कमाल । दर्शन मय्या—
माता जी दे दरबार जिहड़ा प्रेमी निश्चे नाल जावे
भुख प्यास ओहदी मिट जांदी मगे मनोरथ पावे
मय्या दा भवन निराला, जय हो
है सुन्दर सभ तों आला, जय हो
जल दे चलन फुहारे, जय हो
नहांदे संत पयारे जय हो
ओथे झुलदे ने झंडे लाल । दरशन मय्या...

मेरी मां दा रंग चोला

तरज.. मेरा रंग दे बसंती चोला [शहीद]

मेरी मां दा, मेरी मां दा लाल है चोला
मां दा लाल है चोला मेरी मां दा लाल है चोला
लाल लाल मेरी मां दा चोला लगी लाल कनारी जी
हीरे मोती जड़े सितारे पहने आदि कनारी जी
लाल रंग हर रंग तों चंगा रंग अजब अनमोला
मेरी मां दा लाल है चोला। मेरी मां दा...

लाल रंग दे झंडे माता झुलदे तेरे दवारे जी
लाल झंडे नूं लाल तेरे मां पूज रहे ने सारे जी
लाल तेरा झंडा चाड़न नूं भगतां दा आया टोला
मां मेरी दा लाल है चोला। मेरी मां दा—

लाल रंग दे टिके ला के आंदे सेवक सारे मां
लाल रंग है उहनां नूं चड़िया जो तेरे भक्त प्यारे मां
दुरगा सिंह [प्यास] दास है, तेरे मंदर दा गोला
मेरी मां दा लाल है चोला। मेरी मां दा...

दर्शन कर बैठे

माता के दरबार के दरशन कर बैठे
इक नहीं दो वार सने परवार
कि दरशन कर बैठे । माता के दरबार...
जलवा निराला है जी मां के सथान का ।
मईया जी का दरशन है दरश भगवान का ।
महिमा अपर अपार खिलो गुलजार ।
कि दर्शन कर बैठे । माता के दरबार—
सीस पर शतर ते शोभा निआरी है
लाल गल चोला ते सज रही किनारी है
गल फूलों के हार शेर सवार
के दर्शन कर बैठे । माता के दरबार—
[दुर्गा] भवानी जी के दर्शन पाऐ है ।
मन मांगे फल लै के मय्या जी से आये हैं
हो रही जै जै कार मईया के दवार
के दर्शन कर बैठे । माता के दरबार—

मंगलाचरण

भेट नम्बर 2 तर्ज--हीर

ऐत अम्बका जी हिंग लाज जुआला
तेरा परबतां विच दरबार माता
सोम सरुस्ती कालका भदर काली
तैनूं सिमरदा कुल संसार माता।
मंगल मनसा देवी तूं हैं पिंडी राणी
समें समें तूं लवें अवतार माता
बुध बीरता भरी तूं आदि शक्ती
बगे शेर ते होवे असवार माता
वीर वैष्णों जी नैना देवी मय्या
लक्खां भगत सेवक दिते तार माता
शुक्र शक्ती भवानी कृपान हैं तूं
कईआं जालमां नूं देवे मार माता।
शनिचर शांत रूप तूं मां दुर्गा
तैनूं भगत सिमरन सतिवार माता।
रूप ऐक ते नाम अनेक तेरे
दुर्गा सिंह है दास बलिहार माता।

माता जी दे बाराँ माँह

चैत्र

चैत्र चितपुरनी चिंता दूर करनी,
चिन्ता मेरी वी दातीए दूर करदे।
करके दास ते मेहर दी नजर माता,
बेड़ी पार मेरी पहले पूर करदे।
मेरे चित नूं शांती बखश माता,
मेरी आतमा खूब भरपूर करदे।
दुरगा सिंह माता सेवादार तेरा,
गुनाहगार है माफ कसूर करदे।

वैसाख

वैसाख वैष्णों जी तूं है आद शक्ती,
तेरा परबतां विच निवास माता।
सुन्दर गुफ़ा दे विच दरबार तेरा,
हिन्दुस्तान सारा तेरा दास माता।
दुध पुत ते दौलतां बखशदी तूं
निसचा नाल जो करन अरदास माता।
दुरगा सिंह कहिंदा दर्शन करां तेरे,
मेरे चित्त नूं इहो पयास माता।

जेठ

जेठ जुआला मुखी तेरीयां जगन लाटां,
तेरा भवन वी खूब इकांत माता।
तेरीआं जोतां ते तवे जड़ा दिते,
अकबर लैण लगा तेरा अंत माता।
तवे फ़ाड़ के लाटां निकल आईआं,
महिमां तेरी है बड़ी बेअंत माता।
दुर्गा सिंह अकबर तेरा दास बणिआ,
रिहा पूजदा वांग महंत माता।

हाड़

हाड़ हरी माता तैनूं जन्म दिता,
तेरा नाम सिमरां हर कौर माता।
लिआ माता तों सुखना सुख मैनूं,
प्रवरश बड़ी कीती कर के गौर माता।
चंगी मत दिती धरम शरम वाली,
मानस जनम गया मेरा सौर माता।
दुरगा सिंह किवें तैनूं भुल जावे,
जिनां चिर है देही विच भौर माता।

सावण

सावण सरुसती विदिया कहण तैनूं
तैनूं पड़े ते वडे दिमाग माता।
जोतश साईस तेरे विचों होये पैदा,
हिकमत कविता ज्ञान ते राग माता।
नैतर तीसरा विदिया कहिण सारे,
तेरी जोत दा रोशन चराग माता।
दुर्गा सिंह पड़के ज्ञानी बणन पारस,
इजत कदी नहीं लगदा दाग माता।

भादरों

भादरों भदरकाली काली महां काली,
करें राक्षसां दुष्टां दा काल माता।
तैनूं सिमरियां काल वी नस्स जांदा,
प्रीत करन जेहड़े तेरे नाल माता।
महांबीर भैरों पहरेदार तेरे,
लंगर बीर ते लोकड़ा बाल माता।
दुर्गा सिंह कैंहदा तेरे मंदरां ते,
झंडे झुलदे ने लाल लाल माता।

असूज

असू आसा देवी आसां कर पूरण,
तैनूं सभ दुनीया रहीं मन माता ।
तेरे भरे भंडार नहीं कमीं कोई,
दुध पुत ते लक्षमी अन माता ।
करें नास तूं निंदकां पापीयां दा,
भगतां ताईं तूं करें प्रसन्न माता ।
दुर्गा सिंह दुर्गा माता धंन हैं तूं,
ताईं जग्ग करदा धन धंन माता ।

कतक

कत्तें कालका रूप कमख्या तूं
तेरे विच है शकती महान माता ।
काम, करोध, मोह, लोभ, हंकार पंजे ।
मेरे मगर ने पंज शैतान माता ।
इहनां पंजां दे पंजे चों कढ मैनूं
देके बुध दा शुध्द ज्ञान माता ।
दुर्गा सिंह नादान मैं मंगदा हां
मैनूं बखश तूं नाम दान मा[illegible]

मघर।

मघर मानसा देवी मनसा एहो मेरा,
दरशन करां दरबार दे नित माता।
तेरे चरनां विच बोलदा रवां भेटा,
एहो चांहदा है एहो चित माता।
रिशते जग दे विच ने बहुत भावें,
माता बाझ कोई बने ना मित माता।
दुर्गा सिंह दी बेनती आप अगे,
बखशो कवी दरबार विच जित माता।

पोह

पोह पिंडी रानी पिंडी रूप तेरा,
पिंड पिंड विच तेरी है टेक माता।
केहड़े केहड़े मैं गिणके नां दसां,
तेरे नाम ने कई अनेक माता।
भावें वखरे वखरे हैन दरशन,
जोत स [illegible] आं दे विच इक माता।
दुर्गा सिंह कैंहदा तेरे सेवकां नूं,
तती वा दा लगे न सेक माता।

माघ

माघ मंगलां तूं मंगला चार करदे,
मंगलवार मैं वंडां प्रशाद माता।
मेरो मां मैं वेखिया बहुड़दी तूं,
जिथे करां मैं आप नूं याद माता।
मावां ठंडीयां छावां जहान आवे,
ताईऔं रहे ने भगत अगाद माता।
दुर्गा सिंह जिवें सेवक है तेरा,
सेवक बनेगी मेरी उलाद माता।

फगण

फगण फूलां रानी तूं हैं फुलां वाली
तैनूं जानदी है दुनीयां कुल माता।
जेहड़े सुखना सुख के भुल जांदे,
उहदे बदन ते निकलदे फुल माता।
जोत धरमीआं दी सदा रवे जगदी,
दीवा पापीआं दा हुंदा गुल माता।
दुर्गा सिंह बारां मांह पड़न जेहड़े,
माफ करीं तूं ओहनां दी भुल माता।

आरती

ओम ज़ै जगदीश हरे स्वामी जै जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे। ओम ...

जो धयावे फल पावे दुख बिनसे मन का।
सुख संपत घर आवे कष्ट मिटे तन का।
मात पिता तुम मेरे शरन गहूं किस की
तुम बिन और न दूजा आस करूं किसकी। ओम ...

तुम पूरन प्रमातमा तुम अंतरज़ामी।
पारब्रह्म प्रमेशर तुम सब के स्वामी। ओम ......

तुम करना के सागर तुम पालण करता।
मैं मूरख खल कामी किरपा करो भरता। ओम ....

तुम हो ऐक अगोचर सब के प्राण पती।
किस बिध मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती। ओम ...

दीना बंधू दुख हरता ठाकुर तुम मेरे।
आपने हाथ उठाओ दुआर पड़ा तेरे। ओम.....

विशे विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रध्दा भगती बढ़ाओ संतन की सेवा। ओम.....

श्री वैष्णों माता जी की कथा

प्रारम्भ

जम्मू देश में एक महाराजा श्री चन्दर देव था जो ईश्वर का भक्त था उसकी धर्म पत्नी महां रानी सुधरमा वती थी जो प्रमात्मा का भजन करने वालें थे, और यज्ञ दान, करने वाली थी; जगह जगह गीता भवन हिन्दी पाठशाला श्री वेद मंदर सदा ब्रत भंडारे जल की छबील लगा रखी थीं, और यहां के लोग भैरों उपासक थे मास मदरे का अहार करते थे, राणी इन बुरे करम करने वालों को बहुत पापी जानती थी, और मन को शान्ती देनें के लिए महाराजा श्री चन्दर देव जी आपनी सुपत्नी सुर्धमा वती को साथ लेकर श्री हरिद्वार जी के कुम्भ पर इशनान करनें को गए वहाँ सतसंग में गुरु हंस देव जी का ऊत्तम उपदेश को हिरदे में धारण किया। महाराजा श्री चन्दर देव जीओर महा रानी सुर्धमा वती जी हाथ जोड़

कर श्री गुरु हंस देव जी से प्रार्थना करने लगे महाराज हमारे जम्मू देश में चल कर धर्म प्रचार दुआरा लोगों का सुधार करने की कृपालता करें, श्री गुरु हंस देव जी ने बचन मान कर जम्मू देश म धरम प्रचार से लोगों को शुभ उपदेश दिया, यज्ञ हवन किए, जिस के प्रशाद दुवारा महारानी सुधर्मा वंती जी ने श्री चंदर भागा के किनारे एक चन्दर मुखी कनया को जन्म दीया और चन्दर भग ही नाम रख दिया, और दो साल के साल एक बेटा हुआ बेटे का नाम चन्दरशील रखा, चन्दर भागा जब बारां बस दी होई तो उसकी शादी हमेशपुर के राज कुमार शांताकार से होई शांताकार की मतरई माता थ उनके कहिने से पिता ने शांताकार को देश में निकाल दिया था, चंदर भागा पति के साथ जम्मू आ गई महाराज श्री चन्दर देव जी ने शांताकार को मंतरीपुर में एक गांय का राज दे दिया जिसका नाम इस समय वजीराबा है; वहां राज करने लगे चन्दर भगा के भाई को शादी

चिठी मिली तो चंदर भागा पति के साथ शादी में जम्मू गई वहां श्री गुरु हंस देव जी धर्म प्रचार करते करते कश्प मण्डल से आए जिस को अब पुरमडल कहते हैं। चन्दरभागा जी को देख कर श्री गुरु हंस देव ज़ी ने कहा यह लड़की आठ दिन को विधवा हो जाएगी यह बात सुन कर सब को दु:ख हुआ महाराजा जी ने उसका उपा पूछा तो गुरु हंस देव जी ने कहा सभ संसार का कष्ट हरने वाली श्री दूर्गा शक्ति है उसकी पूजा करो भगवती कें सिवा और कोदे रक्षा नहीं कर सकता। यह बात सुन कर चन्दर भागा पति के साथ मंतरी पुर में वाप्स पहुच गई; और देवी जी को पूजा करनें लगी। सम्मत के दिन नदी पर इश्नान करने चले तो शांताकार जी ने बावूल के बृक्ष से दातन उतारने को लाठी मारी तो वृक्ष का एक टाहणा टूट कर शांताकार के सीस में लगा तो खोपरी फट गई और मृत्यु हो गई चन्दर भागा पति को देख कर बेहोश हो कर धरती पर गिर पड़ी जब होश में आईतो बड़ा विरलाप करने लगी गुरु

हंस देव जी कीं बात याद आई तों देवी जी की अराधना करने लगी हठ करलिया कि जब तक श्री दूर्गा माता जी आ कर मेरे पति को सुरजीत न करे तब तक मैं अन्न नहीं खाऊगी और अपने प्रान भी पति जीं के साथ त्याग दूंगी यह प्रन धार श्री दुर्गा माता जी को अराधना करने लगी सात रोज़ बीत सए अष्टमी कें दिन श्री दुर्गा माता जी नें चन्दर भागा का सच्चा प्रेम देख कर शेर पर सवार होकर हाथ में झण्डा और खण्डा पकड़ कर नदी चंदर भागा में प्रकट होकर साक्षात साहमणे आ कर खड़ी हो गई चंदर भागा दर्शन करके अति प्रसंन हो कर कहने लगी हें सुन्दर सिंह वाहिनी आप कौन देवता हमें माता जी नें कहा हें पुत्री तुम डरो मत मैं तेरी भक्ति देख कर आई हुं सच्ची भगती करने वाले को कभी कष्ट नहीं होता मैं दुर्गा भगवती श्री वैष्णों शक्ति हुं तुम वरदान मांगो चंदर भागा नें कहा नेरे पति को सुरजीत करो और हमारी आत्मा को आपने पवित्र चर्ण कमलों में निवास दो माता जी ने

शांताकार को सुरजीत किया। शांताकार भी माता जी के चर्णों में गिर कर नमस्कार करने लगा माता जी वरदान दे कर अलोप हो गई। यह जो चंदर भागा ने पति को सुरजीत करनें के लिए सात रोज दुर्गा जी की भक्ती करनी है और अन अहार नहीं किया श्री दुर्गा माता जी नें शांता कार को सुरजीत किया यही सात नवरात्र माने जाते है जो आज तक हमारे भारत देश को देवीआं अपने अपने मनोंथ को पूर्ण करने के लिए नवरातों का बंत करती हैं, श्री दुर्गा माता जी उनको आशा पूर्ण करती है चंदर भागा नदी के किनारे मंतरी पुर में एक सथान है जिस म श्री दुर्गा माता जी शेर के समेत दिव देही कन्या के सवरूप में रहिने लगी धरमी भक्त दूर दूर से आ कर माता जी के दर्शन करने लगे पूजा पाठ, हबन, यज्ञ, होने लगे बड़ी धूम धाम मच गई गोरख नाथ जी की मण्डली से एक टोला जोगीयों का देश म घूम कर रहा था जिसका करता धरत भैरों नाथ था इसके साथ मंडली थी यहां जाते थ, मदरा मास का अहार करते थ

गृहस्ती लोग देख कर बहुत बुरा मनाते थे, लेकिन कुछ कह नहीं सकते थे इन के बुरे करमों ने दुनियां में अंधेरा फैल दिया था हर गांव जा कर हवन कहते थे, जिसमे बकरे की बली भेंट करते थे घूमते घूमते मन्त्रीपूर में श्री वैष्णों माता जी की शोभा सुन कर स्थान पर पहूच गए माता जी ने जोगी रूप जान कर इन को भोजन को कहा भैरों ने कहा हमारा भोजन मध्य मांस है। माता जी ने सुन कर करोध से कहा मध्य मांस राक्ष भ्रष्ट बुधी वाले खाते हैं आप साधु हो। आप को मध मांस नहीं खाना चाहिए यह सुन कर भैरों ने कहा तुझे लोग सरव इच्छा पूण करनी देवी कहते हे तुम हमारी भी इच्छा पूण करो माता जी न भैरों को खोटी नजर देख कर कहा कुकर्मी यहां से जल्दी भाग जाओ तुम योग को कलंक लगाते हो इतने में कपटी भैरों माता जी का सुन्दर सरुप देख कर काम के नशे में अंधा हो कर माता जी के आंचल को पकड़ने लगा। माता जी दुष्ट भैरों की नीयत देखकर अलोप

हो गई मन्त्रीपुर को छोड़ कर जम्मू चली गई रासते में लंगर बीर मिला माता जी ने सेवक जान कर साथ ले लिया। आगे देव नगर की लड़कीआं खेलती थी माता जी शेर को गायन करके खेलने लग पड़ी लड़कीयों को माता जी ने कई भांत के खाणे खिलाए एक लड़की को माता जी ने कहा जल लाओ, जड़की ने कहा माता जी कोई कौल नही पाणी कैसे लाऊ। माता जीं ने शक्ति से सरवन का कौल बना दिया जिस वृक्ष की छाया में बैठे उसके ऊपर कन्धोलीं की बेल थी कौल कें बनने से और कन्धोली के नीचे बैठने से इस जगह का नाम कौल कन्धोली रखा गया।

रात की लड़कीयां घरों को चली गई माता जी देवा भगवती के पास चली गई उसका प्रेम देख कर माता जी ने उसको वरदान दिया जो कोई भगत तेरे स्थान के दरशन करेगा उसके सर्व कार्य सिद्ध होंगे इस स्थान का नाम देवा का ढक है। देवा माई का बन्स ब्रहम

पुरी गांव में था जो कटड़े के नज़दीक है इस गांव के एक पण्डित श्री धर जी महाराज हुए हैं जो इस जगह से रोज माता ज़ी के दर्शन को जाते थे। माता जी इसका प्रेम देख कर ब्रह्म पुरी ले गए माता जी कई रोज इस जगह रहते रहें इस जगह माता जी ने खेलने की शक्ति से हंस बना रखे थे इस लिए इसका नाम हंसाली कहते हैं स्थान का नाम भूमिका प्रसिद्ध है।

इस जगह निर्मल जल की नदी बहती है। छोटे छोटे जल के चश्मों, से फुहारे चल रहें हूं पास पीपल के बृक्ष हैं जिन पर माता जी पींघ झूलते थे छोटा सा मन्दिर देखने योग्य हैं। पीछे माता जी की खबर लेता भैरों भी आ गया माता शेर पर सवार हो कर चल पड़ी आगे जा कर भगत श्री धर जी को प्रतकश दर्शन दिया दर्शन देनें से इस जगह को दरशनी दरवाजा कहिते है। आगे लंगर बीर को जल की प्यास लगी जल कहीं नहीं था माता जी ने बान मार कर शक्ति से छोटी सी गंगा चला दी और लंगर बीर ने जल पिया बान मार कर गंगा चलाने से इस का नाम

बाण गंगा रखा गया कई बाल गंगा कहते हैं बाल नाम छोटी का होता हैं इस लिए बाल गंगा भी ठीक है। श्री हरिदवार बड़ी गंगा है यह बाल गंगा है। फल दोनों का एक समान बरानर है। इतनें में भैरों ने भी अलख का शब्द कीया। माता जी सुन कर शेर समेत ऊडारी मार कर पहाड़ी पर चड़ गई। एक जगह माता जी के चर्ण लगे इस लिए इस ष्थान का नाम चर्ण-पादुका रखा गया। इस ष्थान को तीसरा दर्शन कहते है। माता जी आगे गए तो क्या देखा एक अत्यन्त सुरंग निकाल कर बैठा तप कर रहा था इसनें माता जी को नमस्कार की। इतनें में भैरों की अवाज आई तो माता जी एक सुरंग में अलोप हो गई भैरों ने अतीत से पूछा तुने एक स्त्री शेर पर सवार देखी है? अतीत नें कहा मूरख योसी वोह तो आदि से कुवारी कन्या है अतीत के कहने पर इस का ताम आद कुवारी रखा गया भैरों नें हंकार से कहा अतीत तूं नहीं बताता तो मैं खुद ढुंड लुंगा। भैरों के भर्भ करने से इस गुफा का नाम गर्भ जून रखा गया और भगवती इस सुरंग मे नौं माह रही

जी का भवन वनवाया यह स्थान जम्मू से २८ मील कटड़ा शहर है यहां से भगवती जी का दरबार १२ मील की दूरी पर है। मारग पर दानो भक्तों ने शीतल जल की छबीलें लगा रखीं हुं। छबीलों पर उबालें हुए चनें तथा औले का प्रशाद मिलता हं भक्त शर्धा से श्री वैष्णों देवी जी की महिमा का प्रचार करते दर्शन को जाते हैं और अनेक प्रकार का दान करते हूं यात्रा असुज के नवरात्रे से शुरु होता है। मघर चौदस तक बहुत फल हैं। आज कल माता जा का प्रचार दिन बदिन बड़ रहा है और दरबार हर वकत खुला रहता है। पर्वत की चढ़ाई समय चमड़े का जूता नहीं पहनते और मास मदरा गंडा लसन नहीं खाते वैष्णों भोजन करते हैं इस जगह सात सुपारी धुजा नारयल मेवा रोलीया मोली का अटा भेंट में हर भगत ले जाते हुं। यह जो सात सुपारी है यह सात देवीओं की एक एक हं यह जो धुजा है धरम की धुजा है यह जो नारयल है यह राकश का सीस हु जो माता जी के चरणों म रखा जाता है मेवा माता जी को भोग लगता है। मोली का अटा माता जी के गन में भेंट किया जाता है। जब दरशन करने को जाते हैं साफ वस्त्र पहन कर जाते हुं। ओ

जैसा बचा मां के गर्भ में नौं माह रहता है माता जी यहां नौं माह बतीत कीए तो इस लिए इस गुफा का नाम गर्भ जून रखा गया माता जी का हुकम है जो मेरा भगत इस गरभ जून की गुफा से गुजरे गा वोह बार बार गरभ जोनी में नहीं आएगा और चुरासी का गेड़ कट जाएगा भैरों आस पास नौं माह माता की भाल करता रहा एक समय इस गुफा में जब दाखल हुआ तो माता जी त्रसूल मार कर सुरंग को फोड़ कर निकल गई माता जी को पकड़ने लगा तो शक्ति जी को शक्ति से लंगर बीर ने खण्डा मार कर भैरों का सीस काट दिया भैरों माता जी के चर्णों में गिर कर अपने अपराध की खिमा माँगनें लगा। माता जी मुझे माफ कर दो मैं भूल गया आप सच्ची माता हो मुझे अपने चर्णों में निवास दो माता जी ने दया रूप हो कर कहा तुम्हारा सीस यहा और धड़ हमारी गुफा के आगे रहेगा। जो भक्त हमारे दरशन को आएगा वो तुम्हारें धड़ पर पांव रखेगें तो तुम्हारी मूक्ति होगीं। तेरे सीस का नाम भैरों मंदिर होगा, जिसका दरशन भगत मेरे दरशन के बाद आती दफा करेगे। पांडवों को खबर मिली तो उन्होंनें माता

माता के चरणों से निर्मल जल की चरण गंगा बहिती
ज़िसमें सब भगत इश्नानान करके माता जी के दरशन
जाते हूं। जब गुफा के भीतर जाते हैं तो पहिला जो
के निचे पत्थर है यह भैरों का धड़ है गूफा के बीच
चलता है आगे श्री वैष्णों माता जी का दरबार हैं जि
शोभा कही नहीं जाती। भक्त अनेक प्रकार की भेंटा
कर दर्शन करते हैं और मन मांगे मनोर्थ पाते हैं और
के अंवे माता जी के चर्णों में लगाकर गले में पाते हैं।
दर्शन कर लेंने की निशानी हे। जब गुफा से लौट
आते हैं तो गुफा के बीच दहिनें हाथ पांडो की यादगार
बाएं हाथ लगर वीर का पहिरा है गुफा के सामने
खड़ा है। भगत जन दरशन करके खुशी प्राप्त करते
यात्रा से स्त्री पुरुष जती सती रहतें हैं निश्चा का
मिलता है।

बोल साचे दरबार की जय ॥

बान गंगा महातम

यह बान गंगा है इसका महातम सुनो यह नदी माता जी ने लंगर बीर को जल पिलाने के लिए बान मार कर निकाली थी इस में इश्नान करनें से ताप पाप दूर हो जाते हैं हर भगत को इश्नान करना चाहिए। नदी के पास दुर्गा मंदर है जरूर दर्शन करे इस बान गंगा मन्दिर के पुजारी महन्त श्री राम रतन जी है।

बोल साचे दरबार की जय ॥

—अथ श्री दुर्गा चालीसा प्रारम्भ—

नमो नमो दुर्गा सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुख हरनी। निरंतर है जोती तुम्हारी। तिहु लोक फैली उजिआरी शिशि लिलार मुखमहा विशाला नेत्र लाल भरकुटि विकराला। रूप मात का अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे। तुम ससार शक्ति लय कीना। पालन हेतु अनद दीना। अंन पुरना हुई जगपाला। तुम हो आदि सुंदरी बाला। प्रलय काल सब नाशनहारी। तुम गौरी शिव शकर प्यारी। शिव जोगी तुमरे गुण गावें। ब्रह्मा विष्णू तुम्हें नित ध्यावें। रूप सरसवती का तुम धारा। सुबुधि अरशी मुनि उबारा। धरो रूप नरसिंह को अम्बा। प्रगट भई फाड़ के खम्बा। रक्षा कर प्रहलाद बचाओ। हरनाकश को सवर्ग पठाओ। लक्ष्मी रूप धरो जगमाही। श्री नरैण अंग समाही। खमीर सिंधू में करत विलासा। दया सिंध दीजे मन आसा।

हिंगलाज में तुमही भवानी। मैहमा अमित न जाऐ बखानी। मातंगी धूमावत माता। भुवनेश वरि मंगल सुख दाता। श्री भैरव तारा जग तारिणि। छिन भालभव दुख निवारकि। के हरि वाहन सोहे भवानी। लंगूर वीर चलत अगवानी। कर में खप्पर खपरि बाजे। जा को देख काल डर भाजे। सोहे असत्र और त्रसूला। जाते उठत शत्र हिअसूला। नगर कोट में तुम हो विराजत। तीन लोक में डंका बाजता। शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे। रक्तबीज सखत संहारे। महिषासुर निरप अति अभिमानी। जेह अधमार मही अकुलानी। रूप करोल कोल को धारा। सेन सहित तुम रिपु संहारा। परी भीड़ संतन पर जब जब। भई सहाए मातु तुम तब तब। आमासुर अरूयो सभ लोका। तब महिमा सभ र हैं अशोका। बोलो में है जोती तुमहारी। तुमहे सदा पूजे नर नारी। प्रेम भगती से जो गावे ।

दुख दारिद्र निकट नहीं आवे । धि आवे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ते सो छुट जाई । जोगीशर मुनि कहन पुकारी । योग न होई बिन शक्ति तुमारी। शंकर अचारय तप कीनो काम क्रोध जोति सभ लीनो निश दिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहि सुमरो तुमको। शक्ति रुप को मरन न पाओ। शक्ति गई तब मन पछताओ । शरणागत हुई जीरती बखानो। जै जै ज जगदंबे भवानी। भई प्रसन्न आदि जगदंबा । दई शक्ति नहीं कीन विलम्बा । मोको कष्ट अत धरो । तुम बिन कौन हरे दुख मेरो । आशा त्रिशना निशट सतावे । रिपु मूरख मोंहि अत डर पावे । शत्रु नाश कीजे महारानी । सिमरू एक चित तुमहें भवानी । करो कृपा हें मात दयाला । शिरधि सिधि दे करहु निहाला । जब लग ज्यों दया फल पाऊं । तुम्हार जस मैं सदा सुनाचं । हर्गा चालोसा जो गावे । सभ सुख भोग परम पद पावे । देवी दास शरण निज जानी । करहु किरपा जगदंबा भवानीं ।

।। इति श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ।।

श्री दुर्गा अवतार प्रारम्भ

प्रथमे श्री दुर्गा शक्ति माता जी को मेरी बारम्बार नमस्कार हो । जिस समय संसार के अन्दर कोई हंकारी जीव पैदा हो जाता है। उसके हन्कार को दूर करने के लिए प्रमात्मा को कोई ना कोई माया रचनी पड़ती है। दैंतों में एक राक्ष महिषासुर था जो देव लोगों रिषी मुनिओं प्रमात्मा के भगतों को बहुत दु:ख देता था, इस ने सवर्गपुरी के राजा इन्दर देव के साथ बड़ा भारी घोर युद्ध कीया जो सौ साल युद्ध होता रहा, देवतियों की सैना हार चली थी, इन्दर जी ब्रम्हा पास पहुंचे आगे ब्रम्हा जी विष्णु जी और शिव जी महाराज बिराजमान थे । उन्हों ने कहा आओ इन्दर किस कारण आए हो, इन्दर जी ने कहा कि महाराज मुझे महिषासुर दैंत ने बहुत कष्ट दिया है, कई देवते उसने सवर्ग पुरी से निकाल दीए हैं । आप कृपा करें जिस से मेरी जीत हो, ब्रम्हा विष्णु अर शिवजी ने महिषासुर के ज़ुलम सुन कर अति क्रोध करने से भूमि पर अगन ही अगन पैदा हो गई। देवताओं के करोध के तेज़ का एक खज़ाना बण कर कनया रुप में नज़र आया, उस कंनया का मुख शिवजी के तेज से बणा धरम राज के तेज से सिर के बाल विष्णु के तेज से भुजा चंदरमां के तेज से कूच, इन्दर के तेज से 'कूटी' बरण के तेज

से 'जांध पृथ्वी के तेज से 'नितम्ब, ब्रम्हा के तेज से 'पाँव, सूरज के चेज से 'ऊगली, वसू के तेज से हस्त की ऊगली कुबेर के तेज से 'नास का, दक्ष परजापत के तेज से दाँत, अगनो के तेज से नेतर, संनेआ के तेज से भिरकुटी,वायु के तेज से कान, इनदेवतायों के तेज से दुरगा माता का सरूप तयार हूआ। उस महिषासुर की फौज के मारने के लीए देवतों ने माता जो को कहा और शसतर दीए शिवजी ने 'त्रशुल, विष्णु जी ने 'चक्कर' अगनी ने 'शक्ती' जल ने सन्ख इन्दर ने 'बज्जर' अते युध में बजाने को घण्टा दीया काल ने 'दण्ड' दक्ष ने 'रुदर की माला' सूरज ने नागपाश दीया, ब्रम्हा ने कमंडल, समुदर ने हार कंगन दीया,हमाला न असवारी करने को'शेर'विशकरमा ने रतनों से जड़े लाल रन्ग के बसत्र लोहे के कवच दीए जिस पर दुश्मन का वार न चले,दुरगा माता वस्तर शस्तर पहिने। लिखा है जब माता भूमि पर पांव रखे तो धरती भूचाल की तरह कांपे,सभ देवते देख देख जय दुर्गा जय माता कहिने लगे, माता जी देवताओं की रखया करन अते महिषासुर के मारने को रण भूमी में पहुंच गई महिषासुर न कहा तूं मेरे साथ लड़ने को आई है, हमारे तेज के आगे बड़े बड़े योधों का सिर झुक जाता है तो तुम एक स्त्री जाती मेरे साथ क्या कर सकती हैं माता ने कहा बड़े हाथी की मौत कोड़ी से ही होती है। तूने देव लोगों की बहुत दुख दीया है मैं तुझे मार कर तेरे

तिवर हंकार को दूर करूंगी तुम जाके अपनी सैना को लड़ने के लिए बुला लो। महिषासुर ने आपने दैंतो की फौज को लड़ने के लिए भेजा माता जी ने इस की सैना को मार कर भगा दिया। फिर महिषा सुर तिसकर दैत से सैना की सहयता मांगी तिसकर दैत ने साठ हज़ार सैना भेजी दुर्गा माता जी ने इसकी सैना को भी मार दोया फिर महिषासुर ने तामर दैंत को कहा इसकी एक लाख सैना आई जिस नें बड़े २ योधा आए,परन्तु शक्ति जी ने मार मार कर भूमी पर गिरा दीये महानू वाला बड़ा भारी दैंत था यह भी एक लाख फौज लेकर आया। वाशकल असर भी घोड़े रत्थ हस्ती लेकर आया। सभी राक्ष इकठे होकर माता जी के साथ युद्ध करनें लगे। माता जी शक्ति से खण्डा पकड़ कर रण भूमि पर कूद पड़ी।

माता जी ने हज़ारों दैतों का सीस काट दीया, जिस समय युद्ध में संख की धुनी और घण्टे की घनघोर आवाज़ होती थी ते हज़ारों दैंत आवाज़ से ही मृत्यु हो जाते थे,युध में ऐसा खण्डा चमकता था जैसे आसमान पर बिजली की चमक होती है, शेर ऐसे गरजता था जैसे बादल गरजता है। माता जी की अवाज़ का शब्द सुन कर कईयों के प्राण निकल जाते थे, कईयों का आवाज़ से खून सूख जाता था, माता जी का खण्डा चलता देख कर कईयों के सरीर के रोम खड़े हो जाते

थे तिरशवर दैंत ने माता जी के ऊपर बहुत जोर शोर से शस्त्रों की मार मारी। मानों ज़ैसे गड़ों की वर्षा बरसती है। ऐसे माता ऊपर राक्षों ने तीरों की बरखा करी प्रन्तु माता जी के सरीर पर फुल जितनो चोट भी न लगी। माता जी ने अपनी शकती से शतरूयों के भी शस्त्र खण्डत कर दीए। हाथी घोड़े मार दिये कई दैतों को भी मार दिया, महानू बाला की सैना ने युध्द कीया तो माता जी ने उनकी सैना को मार दिया वाश्कल दत की भी सैना मार दी, फिर महिषा सुर खुद हजारों भुजाएं बणा कर साहमणे हो कर युद्ध करने को आया, बड़े बड़े वार करता रहा कोई पेश न चली। फिर हाथी के रुप में आया, माता जो ने खन्डा मार कर सून्ड काट दिया, फिर सन्डे के रुप में बड़े बड़े तीखे सींग बना कर आया माता जी को शोर के समेत सीघों पर उठा कर धरती पर पटकने का इरादा कीया, परन्तू माता जी खुद महां शक्ति हैं इसे कौण मार लकता है। माता जी ने आते ही सींग खण्डे से काट दीये। फिर महिषासुर ने माया फैला कर सरीर का विसथार बड़ा कर लीया माता जी को आगे से भी बड़ा करोध उपजा नेतर लाल करके राक्षों की सैना को मार दिया रणभूमि में खून की नदीएं चल गईं। कई दैतों के सीस काट कर धरती पर गिरा दीए आखिर महिषासुर साहमणे हूआ तो माता जी ने उसकी हजार भुजायों को

वृक्ष के पतों के मानिंद झाड़दीया। जब अति निरबल हो गया तो हाथ जोड़ कर कहिने लगा हे माता आप जीते, मैं हारा। आप कृपा करके मेरी मुकती करें और अपणे चरणों में निवास दें मैं हमेशा चरणों में रहूंगा परन्तू मुझे खाने को भोजन ज़रुर मिलना चाहोए माता जी ने तथा अस्तू करके कहा तुम किस वस्तू का भोजन खाणा चाहते हो कहिने लगा आप बचन करो तो कहता हूं माता ने बचन कीया तो महिषा सुर ने मास का अहार मांगा माता जी ने कहा किस चीज़ का मास खाएगा तो दैंत बोला मेरा नाम महिषासुर है मै महो के मास का अहार करता हूं। माता जी ने झोटे का सोस काट इसको खलाया और बाद में इस का सीस भी काट दीया।

ज्वाला जी की कथा शुरू

कलकते में राक्ष बुध्दि वाले लोग काली माता को झोटे पशू बकरे काट २ कर भेटा देने लगे इस लिए जगदम्बा अलोप होकर पहाड़ धरती में रहने लगी। राक्ष बुध्दि वाले लोग माता जी के आगे यहाँ भोसंडे भेड बकरे काट २ कर भेटा देने लगे परन्तु यह नहीं सोचा कि माता जी ने तो महिषासुर को झोटा काट कर अहार दीया था परन्तु यह लोग माता जी को मास की भेट देने लग पड़े इस लिए माता जी ने करोधवान हो कर ज्वाला का रूप धारन कर लीया ज्वाला नाम अगनी का

है और जो साखशात भगवान की जोती होती है जिस जोत के प्रकाश से अन्धेरा दूर होता है उस जोत का मुख भी है जिस मुख के बीच में बाती टिकाई जाती है तो इस लिए जोत का नाम भी जव ला मुखी है तो माता जी कांगड़े के पास पहाड़ों में आ गए यह असथान ज़िला हुशिआर पुर में है गोपोपुर डेरा से ५ कोस है, यहाँ मन्दर के पास सूरज कुंड है, जिस में भगत लोग श्नान करते हुए जवाला के दर्शन करते हैं, ज्वाला की सात लाटें बगैर तेल बती के दुर्गा की शक्ति से जल रही है यह सात लाटें सात भैणे है इस अस्थान के पास पहाड़ों के अति सुन्दर दर्शन है। प्रेमी भगत आकर माता जी के दर्शन करते हैं। इक ध्यानूं भगत हुआ है जो नादोन गाम से दरशन को आता था एक समय मंडली को साथ लेकर दरशन को जा रहा था तो अकबर ने पूछा इतनो धूम धाम से कहां चले हो धयानू भगत ने कहा जवाला मईया के दरशन को चले है, अकबर ने कहा जवाला में किया शकती है, और किया फल मिलना है। ध्यानूं ने कहा जो मन इच्छा माँगो सो ही फल प्राप्त होता हैं और वहां बगैर तेल बती के जोती जग रही है, अकबर ने कहा बगैर तेल बती के चिराग कैसे जल सकता है, यह बात भूठ है मैं नहीं मानता धयानूं ने कहा आप चल कर देख सकते हैं। इतना सुन कर अक्बर तयार हो कर अजमाने को मन्दर में पहुंचा देखा तो

जोतें जग रही हैं। देख कर कहणे लगा इस का क्या है मैं अभी बुझा देता हूं उसी वकत जोतों पर लोहे के तवे जड़वा दिये। जवाला की शक्ति से तवे फाड़ कर लाटें निकल पड़ी। अकबर ने कहा आग के तेज से लोहे के तवे फूट गए हैं मैं अभी इस के ऊपर पाणी डाल कर बुझा देता हूं। अकबर ने पानी मंगा कर जोतों पर डाला तो जोतें फिर भी जगती रहीं फिर अकबर ने पहाड़ कटवा के पानी की नहिर जोतों पर डलवाई तो नहर का पानी पैनें से मन्दर में जल ही जल हो गया जोतें आगे से भी बढ़ कर जगने लगीं अकबर देख कर हैरान रह गया तो धयानूं भगत ने कहा देखो जवाला मईया की शक्ति माता जी तो मरे हूए को जिंदा कर सकती है। अकबर ने सुन कर अति करोध में आ कर ध्यानूं भगत के घोड़े का सीस काट दिया तो कहिने लगा बुला अब जवाला को जो इसे आ कर जिंदा करे तो मैं भी मान जाऊंगा नहीं तो घोड़े के साथ तेरा भी सीस काट दूंगा। भगत की पुकार सुन कर शकति जी ने घोड़े को सुर्जीत कर दिया। बोल साचें दरबार की जय ध्यानूं भगत जय जवाला जय दुर्गा जय शकती कहने लगा तो अकबर का सीस झुक गया तो नांगे पाओं से सवा मन सोने का छतर ले कर माई के दरशन को आया और माता से माफी माँगने लगा।

अकबर पर मय्या जी ने दया करी। दूर २ से प्रेमी जन

दर्शन को आते हैं। यह मेला चेत असूज के नरातों में लगता है। कुछ समां लोग झोटे की बली ज्वाला के भवन में देते रहे परन्तु कुछ सदी के बाद बुद्धिमानों ने विचार कीया कि माता जी ने तो उस समय दैत के साथ कीए बचन को पूरा करने को झोटे का सीस काटा था अब झोटे का सीस काटने की क्या ज़रूरत है अब कई प्रेमी बकरे के सीस की भेंट करते हैं। परन्तु माता जी को तो किसी किस्म की बली लेने को इच्छा नहीं है। माता जी को तो सिरफ भगतों के सचे प्रेम की इच्छा है, सचे प्रेम से मन इच्छा फल प्राप्त होता है।

श्री जवाला जी का महातम

अकबर ने जब सवा मन सोने का छतर भेंट कीया परन्तु इतनी बड़ी भेट का दिल में अभिमान हो गया। इस लिए वे छतर अष्ट धातू का हो गया। अभिमान करने से तीर्थ बरत दान खण्डन हो जाते है। यह शब्द गुरू ग्रन्थ साहिब में भी आता है।

गुरु बाक—तीरथ बरत अर दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात हैं, जयों कुंचर इशनान।

इस छतर और मन्दर का दरशन बड़े दरबार से बाएं हाथ है आगे महां लक्षमी का मन्दर है यहां पर दरशन करने से

लक्षमी प्रसन्न होती है और लक्षमी में वाधा होता है इस के आगे सूरज कुण्ड हैं जिसमें स्नान करनें का अति फल है। स्नान करके दर्शन करते हैं।

गोरख टिबी

बंगाल देश से मंडली समेत गोरख नाथ जी जवाला जी के दर्शन को आए। माता जी ने भोजन कहा। तो गोरख नाथ जी ने कहा पांच घरों की भिछा मांग कर भौजन करते हैं। चेलों को बोला तुम चुल्हे पर पाणी गरम करो आज माघी का दिन हैं लोग खिचड़ी कासीदा मनसते है मैं अभी खिचड़ी लेकर आता हूं। भीम नाथ और अरजुन नाथ रसोई की सेवा में लगे। पाणी उबालते उबालते १२ बरस हो गए। गोरख नाथ अब तक वापस ना आए। अरजन नाथ दो फरलांग ऊपर पहाड़ी चढ़ कर गोरख नाथ को देखने गए। वहां पर नज़र ना आए तो अरजन नाथ ने वहां समाधी लगा दी। समाधी में गोरख नाथ ने कहा जब फिर सतयुग आएगा तब हम आऐंगे तो दुर्गा अन पूरनी के रुप में सभ संतों को खिचड़ी दा भन्डार देवेंगे। उस भंडार में अब तक पाणी खौल रहा है, दरशन के योग है अब इस असथान की सेवा स्वामी प्रेम नाथ कर रहे हैं। गोरख टिब्बी के ऊपर राधा कृष्ण मन्दिर के दर्शन करो, अब शिव मन्दर है।

लाल शिबाला

मुकतेश्वर महांदेव के नाम से प्रसिध्द हैं। मन्दर बहुत प्राचीन है। इसमें बड़ी सिफत यह है कि मन्दिर के इरद गिरद भगवान के २४ अवतारों की मूरतीऐं है, इस मन्दर की पूजा इस वकत ब्रम्हचारी ब्रिजा नंद जी करते हैं।

अम्बेकशवर

जम्बेकक्ष्वर महांदेव मन्दिर अति सुन्दर देखने के योग है इस अस्थान का दर्शन करने से मन अति प्रसन्न होता है। वह जगह शिव भंडार यज्ञ होता हैं। अगे रघुनाथ मन्दिर है इसके उपर अरजन नांगे का दर्शन हैं, इस जगह जल की बहुत ज़रूरत हैं। कई दानी पुरुष सेवा करने का लाभ प्राप्त करे पास छोटा सा सीतला मंदिर है सीता राम मन्दर का स्थान में महाँबीर और भैरों के दरशन करें। तारा देवी का मन्दर देखो वीर कुंड में भी स्नान का पूरा फल है।

कांगड़ा मन्दर

इस मंदर में मय्या जी का दर्शन करने को बहुत भगत जाते हैं। इसे कोट कांगड़े वाली मय्या के नाम से पुकारते है, इस मन्दिर श्री तारा देवी के नाम पर प्रसिध्द है जहां पर जैसी जैसी मनों कामना करते हैं बैसा बैसा फल मिलता है।

बोल सच्चे दरबार की जय॥

श्री चिन्त पुरनी माता की कथा

प्राचीन समय में जालमों के जुल्म आत्याचार को देखकर सन्सार के जीव दुःख से तड़प रहे थे मन को शान्ती देने के लिए सुभा शाम आदि शक्ति महा माईया दुर्गा जी की पूजा करते थे एक भक्त माई दास हुवा है जो देश सेवा करता था हर रोज़ महाराणी जगदम्बा का सिमरन करता था। एक बार मंगल वार के दिन भक्त माई दास अपने घर में समाधी लगाकर माता जी की पूजा कर रहा था सांची भक्ति देख कर अष्टभुजी दुर्गा सिंह पर सवार होकर सक्षात भक्त के साहमने आकर कहने लगी हे सिमरन करने वाले सांचे भक्त तुम्हारे मन की क्या ईच्छा है, जो इतनी भक्ति कर रहे हो यह शब्द जब कानों में पड़ा ती आँखे खुल्ल गई। माता जी का दर्शन किया तो मन को शांती मिली चरणों पे गिर पड़ा सीस झुका कर कहा जगत जननी माँ ज़ालमों को चूर करो। भक्त जनो की चिन्ता दूर और मुझे तो सिर्फ आप का अर्शीबाद चाहिए, देश सेवा करने को चाहना है। माता जी ने भक्त माई दास को कहा मैं तुम्हारी मनो कामना पूर्ण करूंगी और सन्सार की चिन्ता दूर करूंगी। तुम मेरा मन्दिर बनवाओ सत्य संग कीरतन पूजा पाठ करो। मैं तुम्हारे अंग संग रहुंगी। भक्त माई दास ने हाथ जोड़ कर नमस्कार की माता जी अर्शीवाद देकर अलोप हो गए। भक्त माई दास और भक्त जनो ने मिलकर माता जी का अति सुन्दर मन्दिर

बनवाईया हवन यज्ञ किया। सुभा शायम माता जी की पूजा होने लगी जो कोई नर नरी माता जी के मन्दिर में जाकर दर्शन करते थे उनके मन को शांती प्राप्त होती थी। चिन्ता दूर होती थी इस लिए माता चिन्त पुरनी का नाम प्रसिद्ध हुआ है। एक भक्त ने अपनी जुबान काट कार माता जी के चर्णों में भेंट कर दी थी माता जी ने भक्त की सांची आतमा समझ कर, जुबान फिर से लगा दी थी। माता जी का प्रचार दिन बदिन बड़ता गया भक्त जन दूर २ से आकर दर्शन करने लगे कई प्रकार की भेटा देने लगे।

यह स्थान ज़िला ऊना में है।इस मन्दिर को होशयारपुर से सड़क जाती है बस अडडे का नाम भरवांई है।। इस जगाह से माता श्री चिन्त पुरनी जी का मन्दिर दो किलो मीटर है। यहां पर असूज व चेत के नुरातों में मेला होता है सभ से बड़ा मेला सावण अष्टमी को होता है। भ त जन दूर २ से आ कर शानदार झन्डे सजा कर मन्डलीयों के साथ श्री दुर्गा माता जी के दर्शन करते हैं। भक्त हवन यज्ञ दान करते है जल की छबीलें लंगर भण्डारे लगाते हैं कई भक्तों ने मिलकर यात्रीयों के ठेहरने के लिए धर्म सालां बनवादी है। मय्या जी को भेंट चढ़ा कर मन मांगे फल पाते हैं। मन्दिर की शोभा निराले ढंग की है इस मन्दिर मे कई भांत की दुर्गा मुर्तीएं बनाकर प्रेमी जन मन्दिर की शोभा बड़ाते हैं। यहाँ पर नर नारी जती सती रहते हैं। निसचा का फल मिलता है।

बोल सांचे दरबार की जय।

भगतो फूल बरसाओ

भेंट तरज –बहारो फूल बरसाओ (सूरज)

भगतो फूल बरसाओ मईया का भवन आया है।
भेंटा प्रेम से गाओ मईया का भवन आया है।
मईया के मन्दर की शोभा सभी जग से न्यारी है।
है सिर पर छतर सोने का शेरों पर सबारी है।
दरशन प्रेम से पाओं मईया का भवन आया है।
भगतो फूल बरसाओ मईया का भवन आया है।
धुजा नारियल सुपारी की भेंट चढ़ा लो हाथों से
चरन धूडी को माथे पर लगालो आपने हाथों से
सीस श्रध्दा से झुकाओ मईया का भवन आया है
भगतों फूल बरसाओ मईया का भवन आया है
यहां से सभ कुछ मिलता है एह दुर्गा का द्वारा है
मईया से मांग लो भगतो मनोरथ जो तुम्हारा है
झोलीयों भरके ले जाओ मईया का भवन आया है
भगतो फूल बरसाओ मईया का भवन आया है

कवी–दुर्गा सिंह 'प्यास' एन्ड सन्ज
इस्लाम गन्ज लुधियाना को याद रखें

—o—

श्री हरीश चन्द्र जी दानी

राज आपना धर्म लड दान करके,
हरी चन्द नौकर बनिया चूड़िआं दा।
तारा राणी दीयां जल्फां खुलीयां ने,
रिहा शोक नहीं गुत्तां ते जुड़ियां दा।
रोइ तास दे कपड़े पाड़ गए ने,
पलिया होया सी जेहड़ा झगुडियां दा।
अज वेले सिर रोटी वी लभदी नहीं,
खादां थाल सी खीर ते पुड़ियां दा।
हरी चन्द नूं डेड पा मिले आटा,
पूराणा कौड़ा खादा होया लुड़ियां दा।
दाल साग ते सब्ज़ी दा ना ही नहीं,
तेल बिनां अचार लसुड़ियां दा।
अज बोरी दा बिसत्रा रात नूं ए,
मालक पलधा ते कुर्सीयां मुड़ियां दा।
दुर्गा सिंह जिस सीस ते ताज हैसी,
अज चुकिआ टोकरा कुड़ियां दा।
सारे सुख संसार दे छडके ते,
मरद विक गिया कीती जुबान उते।
हरी चन्द जी चन्द दे तेज वाँगूं,
भगत चमकदा चन्द असमान उते।

—0—

हिंद दे जवानां शूरबीरा

तरज़ : चिटीयां कपाह दीयाँ फुटीयां

हिन्द दे जवानां शूरबीरां सिफत तेरी दुनियां करे।
वेखके करारे हथ तेरे ते वैरी नसे परे दे परे।

तूं तां वैरी दिआं टेंकां नूं तोड़िया।
मुंह पाक दीयां तोपां दा मोड़िया।
जहाज़ तूं तां फुन्ड के धरे। वेख के...

लैण आए सन जेहड़ें कशमीर नूं।
हथीं दे के गए सगों हाजी पीर नूं।
तेरे कोलों मोत वी डरे। वेख के...

सुट दिते हथ्यार वैरी हार के।
जित योधियां तूं कीती जान वार के
वैरीयां दे लखां ने मरे। वेख के।

दुरगा सिंह दा पन्जाब देश रंगला।
जाके फोज ने बचाया देश बंगला।
रिफूजी गए अपने घरे। वेख के ...

--o--

Public Meeting held at Bangkok (thailand)
15 August, 1971

Freedom Songs by
KaVi Durga Singh 'Pyas'
Ludhiana

In the presence of Mr. R. C Arora Councellor Embessy of India, Bangkok. Mr. P. J Alexander, President—Indian Association of Thailand

देश प्यार

सभ कुछ वतन दे वासते कुरबान कर दियांगे।
भेटा वतन दे वासते जिंद जान कर दिश्राँगे।
कशमीर लई पण्डतां कीती सी जद पुकार जी।
दिली 'च नौवें सतिगुरू दिता सी सीस वार जी।
दसमेश वांग लालां दा बलिदान कर दिश्रांगे।
भेटा वतन दे वासते जिंद जान कर दिश्राँग। सभ,

गैहरी नज़र दे नाल जो वेखेगा साडे देश नूं।
हिन्दी जवान आखदे पावेगा जो कलेश नूं।
बैरी दे घर नूं फूक के वैरान कर दिश्रांगे।
भेटा वतन दे वासते जिंद जान कर दिश्रांगे। सभ...

पहले किसे दे नाल वी नजाईज असीं करदे नहीं।
हां वीर भगत सिंह दे फाँसी तों असीं डरदे नहीं।
सेवक हां ऊची देश दी असीं शान कर दिश्रांगे।
भेटा वतन दे वासते जिंद जान कर दिश्रांगे। सभ

जगराते मे बोलने वाली कथा
महाराणो तारा देवी जी की कथा

दक्ष राजा की दो बेटियाँ थीं, एक का नाम रुकमन, एक का नाम तारा देवी था। दोनों भैंणे कासती का ब्रत करती थी। एक रोज तारा देवी ने रुकमन को बाजार से ब्रत में आहार करने को फलोहार मंगवाई, रुकमन बाजार में गई तो देखे एक दुकान पर मास तलकर वेचरहे थे इस की इच्छा बदलगई तो इसने अपने फलोहार वाले पैसों का तला हुआ मास लेकर खा लिया और तारा देवी के लिए फलोहार ले ली, घर गई तो भैण तारा ने पुछा तुम फलोहार नहीं लाई तो रुकमन ने साचो बात कहीं के मैंने तो अपने पैसों का तला हुआ मास लकर खा लिया है सुनकर तारा देवो ने सराप दे दिया तो रुकमन को किरली की जून मिली। पाँडवों ने यज्ञ रचा तो माता जी ने कहा मेरा भवन त्यार करो। पर मेरे भवन का बुनयादी पत्थर रखने से पहले। यह दो राक्षस रहते है मदु कैंटब दोनों भाई हैं, उनमें से एक का सीस काट कर नींव में रखो, तो आपकी हर मैदान में जीत होगी।

पाँडवों और मदु कैटब का बड़ा घोर युद्ध हुआ आखर मदु का सीस काटकर नींव में रखा ओर भवन त्यार हुआ। पाँडवों ने भवन की खुशो में यज्ञ रचाया दक्खन देश के चावल और कामधन का दुध लकर खीर का भण्डार त्यार किया। कैटब राक्षस ने अपने भाई का बदला लने को कौग का रुप धारकर मरा हुआ साँप खीर के कड़ाहे में फैंक दिया, कि सांप दा विष इस खीर में मिल जायेगा तो वह लोग जिन्हों ने मेरे भाई मदु का सोष काटा है वोह सब खीर खाने से मृत्यु हो जायेगे और जो रुकमन ने कासती वरत में मास खाया था तो तारा के सराप से वोह किरली को जून में पड़ी थी। खीर के कड़ाहे में सांप डालने की सब बात देख रही थी, इस किरली ने सोचा अब मैं इन सब की जान बचाने को परउपकार का काम करूं। इस किरली ने क्या किया जब खीर के कड़ाहे को चुल्ले से उतारने लगे तो किरली इस कड़ाहें में गिर पड़ी रिषियों ने कहा हे नीचनी यह क्या किया, भक्तों ने किरलो को सराप दे दिया खीर को दबा देने का वचन किया। जब खाता निकाल कर खीर फंकने लगे तो बोच से बड़ा

भारी मरा हुआ साँप निकला, देखकर भक्तों ने अन्तर ध्यान होकर सोचा यह किरली कोई बड़ी भक्तनी हैं; जिस ने हम सब लोगों की जान बचाने को खुद जान दे दी है अगर यह कड़ाहें में ना गिरती तो हम सब खीर खाकर मृत्यु हो जाते इस ने हमारे लिए अपना शरीर त्याग दिया है इसका उदार करो जो इसको सराप दियाहै वोह वापस लो। रिषियों ने सराप वापस लिया तो इस को शुभ वर दिया। जो इस को मानुष जूनी प्राप्त है। समाँ पाकर इसका जन्म राजा (स्परस) के घर में हुआ। जो एक पहर रात रहते सुबह मंगलवार को जन्म हुआ पंडतों ने वेद विचार कर कहा के इस कन्या का मारना भी घोर पाप है। इस कन्या का मारना भी घोर पाप है। इस लिए चांदी और सोंने का एक संदूक बना कर उस में इस कन्या को डाल कर छोड़ दो। सपरस राजा ने ऐसा ही किया। काशी का एक पण्डत नदी पर इशनान कर रहा था। यह संदूक पण्डत को नज़र पड़ा। पकड़ने लगा तो इस के हाथ

में सन्दूक नहीं आया बड़ी कोशिश करी जब पकड़ने को हाथ आगे बढ़ाये तो सदूक डूंगे पानी में चला जाए। जब नदी से बाहर निकले तो संदूक फिरकिनारे को तरफ आ जाए, यह कुछ करते सवा पहिर गुजर गया इतने में एक भंगी नदी के किनारे आया। पंडत ने इसके साथ संदूक की भाईवाली का वचन किया और सन्दूक को निकालने लगे। आखर यह सन्दूक भंगी के हाथ में आया। जब देखा सोने चांदी का सन्दूक हैं तो खोला तो एक छोटी सी लड़की निकली बड़ा सुन्दर दर्शन था और साथ एक हजार चादी के नकद रुपये थे। भंगी के घर सन्तान नहीं थो इस लिए लड़की और एक हजार रुपया भंगी ले गया और जो सोने चांदी का बड़ा कीमती सन्दूक था वोह पंडत ले गया। लड़की जब वर प्राप्त हुई तो उस की शादी काशी में एक भंगी के घर में हुई। इस कन्या का अति सुन्दर सरूप जानकर इसको किसी घर में भी सफाई के लिये नहीं जाने देते थे। इस लड़की की सास एक रोज के लिए यातरा को गई और इस

कन्या को सिरफ देवी के मन्दिर में जाकर सफाई करने के लिए कह गई उस लड़की ने मंदर में जा कर झाड़ू के सिवा आपने सिर के वालों से सफाई करी। कुछ समय बाद लड़की की सास आई तो एक रोज मंगल वार के दिन माता जी के मंदर में जगराता था। यह लड़की को सास ने मंदर में सिर के वालों से सफाई करते देखा तो कारन पूछा। लड़की ने कहा यही दुर्गा माता का स्थान है। ऐसी पवित्र जगा को गन्दे मन्दे झाड़ू से सफाई करना ठीक नहीं आज रात को माता जी का जगराता हैं। यह बात सुनकर सास को भी ज्ञान हो गया और रात को दोनों सस बहू जगराते में आई माता की महिमा को सुन कर दिल में अति प्रसन्नता हुई। सास ने पांच भेंट दे कर कहा हे माता के भगतो माता के अरदास करो जी मेरे घर पोता जन्में तो मैं भी अपने घर जगराता करवाऊंगी भगतों ने अरदास करी तो समा पाकर भंगन के घर पोता जन्मा और चाली रोज के बाद भंगन ने जगराता करने वालो मंडली को कहा के हमारे घर में चल कर जगराता करो। मडली

से एक भक्त इस का घर देखन को गया तो भंगी का घर समझ कर जगराता करने से इनकार कर दिया और कहा के तेरे घर में जगराता तब हो सकता है जी इस शहर का राजा हरीश चन्दर हैं उसकी महाराणी तारा देवी जगराते में शामल हो। असल बात तो जगराता करते से इनकार करने का ढंग था भई ना तो महाराणी तारा देवी नीचों के घर में आयेगी और न हम इस के घर जाकर जगराता करेंगे। इस बात को सुनकर रुकमन ने कहा मैं महाराणी तारा देवी को घर में जरुर लाऊंगी। अगले मंगलवार को जगराते का प्रोगराम मेरे घर में जरुर करो। अब महाराणी तारा के घर में सफाई करने को रुकमन ने अपनी सास को कहा आज महाराणी तारा देवी के घर में मैं खुद सफाई करने को जाऊंगी। सास ने सवीकार कर लिया। रुकमन महाराणी तारा के घर में सफाई को गई तो महाराणी तारा को कहा भंण जी मैं तेरे साथ कुछ बातें करनी चाहती हूं। महाराणी तारा देवी ने कहा बात करने से पहले मुझे यह बात बताओ के तुम भंगन होकर

मुझे भैण किस तरह कहा हैं । पहले इस बात का उत्तर दें । रुकमन ने पीछे बीती सब बात करनी शुरु की कि तुम मेरी सकी भैण हो । जब दोनो ने कासती ब्रत किया था और मैं फलोहार लेने को गई मैंने कासती ब्रत को भंग किया जो फलोहार के बजाए तला हुआ मास खा लिया था तूने मुझे सराप दिया मैं किरली बन गई फिर यज्ञ ससय कैटवदैंत ने खीर के कड़ाहे में सांप डाल दिया। मैंने सोचा खोर में सांप का विष है। खानें वाले सब मृत्यु हो जायेगे । हजारों की जान बचाने और किरलीं जून बदलने के लिए कड़ाहें में खुद गिर मरी और लाखों की जान बचाई । मेरे गिरने से रिषियो ने मझे पीचनी कहा । जब खीर में सांप निकला तो रिषियों ने मेरी चुरासी काटी । अब मुझे राजे सपरस के घर जन्म मिला है पर तेरे सराप ने मुझे नीच घर रखना था पंडतों ने मुझे नदी में रुढ़ानें को कहा मुझे सन्दूक में डालकर नदी में रुढ़ाया गया, मुझे एक भंगन ने पाला और भंगी के घर ही मेरी शादी हुई मैं तो तेरी सकी भैण

हूं । महाराणी तारा देवी को यह बात सुन कर यकीन हुआ तो कहा भैण जी सच्ची बात है अब कहो मैं तेरी क्या सेवा करु । रूकमन ने कहा आए मंगलवार को मेरे घर जगराता है और जगराता करने वालों की एक शंत है अगर महाराणी तारादेवी जगराते के घर में आए तो जगराता करेंगे । महाराणी तारा देवी ने जगराते में आना मनजूर कर लिया रूकमन घर चली गई महाराजा हरीश के साथ एक छोटी जात का आदमो छूं गया । जिससे महाराजा हरीश चंदर नराज हुआ तो इस आदमी ने कहा महाराज जी आप मेरे साथ छूने से नराज होते है। आज तेरी महाराणो तारा देवी ने भंगीयों के घर हो रहे जगरातेमें रात को जाना है और वहां जगराते का प्रशाद भी उस को लेना पड़ेगा आप मुझे काहें को निराज होते हैं । यह सुनकर बड़ा हैरान हुआ कि यह बात कभी नहीं हो सकती मेरो राणी भंगोयों के घर में जगराते जाएगी मैं नहीं मानता । महाराज ने उस रात आपनी एक ऊंगली को चाकू से चीर कर निमक लगा दिया कि मुझे

नींद ना पड़े और ना मैं राणी को जाने दूंगा। राजा
हरीश चंदर ने ऐसा ही किया महारानी पति की सेवा
में लगी आखर महाराजा हरीश चन्दर को नींद आ
गई। परन्तु राजा जी ने सब किवाड़ों को ताले लगा
रक्खे थे। राणी को सब रासते बाहर जाने के बन्द मिले।
महाराणी तारा देवी किए वचन को पूरा करने के
लिए रोशन दान के साथ एक रसा बांध कर चली
गई, कुछ समय के बाद राजा की आंख खुली तो
देखा महाराणी तारा मकान में नजर ना आई
तो इसका पता करने को बाहर निकला बड़ी अन्धेरी
रात थी महाराणी तारा देवी जब जा रही थी तो
एक चोर रासते में मिला। रात अन्धेरी थी परन्तु
बिजली की चमक से सुन्दर अभूषन सोने के जेवरों
का चमकारा पड़ा चोर ने पीछा किया पर अन्धेरी
रात के कारन पकड़ ना सका एक जगह महाराणी
तारा देवी के पैर की एक खड़ां गिर पड़ा जो एक
चोर के हाथ में आ गई राणी जगराते में शामल
जा हुई, महाराज हरीश चन्दर ने चोर से पूछा
बता क्या हाल है। चोर ने समझा यह भी कोई
चोर होगा चोर ने कहा—एक बड़े घर की इस्त्री

थी कई सोने के जेवर पाई जा रही थी। बद नसीबी से मेरे ना हाथ आई, यह देख उसके पैर की खड़ाओं है। राजे ने देखा कि खड़ाओं तारा राणी की है चोर से लेकर देख भाल करी तो खड़ां को एक सन्दूक में बन्द करके ताला लगा दिया, जो इसकी निशानी दिखा कर तारा राणी को झूठा करूंगा। लेकन राजा को नींद ना पड़े फिर देख भाल को निकला तो जगराते में बज रहे ढोलक छैने की ध्वनि कान में पड़ी तो पता लेता लेता जगराते के मकान में पहुंचा, तो देखा तारा राणी ठीक जगराते में बैठी है। आप लोक लाज के लिये छुप कर बैठा रहा। अब प्रातः काल [सुबह] का समय होने पर आया तो जगराते के भोग समाप्ती के समय पर अरदास बेनती और आरती हुई प्रशाद बांटना शुरू किया, सभ लोगों ने कहा सब से पहिले प्रशाद महाराणी तारा देवी को दो। अगर यह खायेगी तो सब खाएंगे।

यह बात राजा हरीश चन्दर के कान में पड़ी तो बड़े करोध में आया कि नीच घर में आना ही बड़ा पाप है। जेकर यहां का प्रशाद महांराणी ने

खा लिया तो अभी तलवार से कतल कर दूंगा। यह बात दिल में सोच ही रहा था तो प्रशाद बांटने वाले ने महाराणी तारा देवी को सब से पहले प्रशाद दिया महाराणी ने श्रदा से प्रशाद ले कर रख लिया। सब लोग कहने लगे महाराणी ने प्रशाद क्यों नहीं खाया जब तक महाराणी प्रशाद नहीं खायेगी। आगे प्रशाद नहीं बटेगा और कोई नहीं खाएगा महाराणी ने कहा यह प्रशाद मैंने महाराजा के लिये रखा है मुझे और दो मैं खाऊंगी।

भगतों ने कहा यह जो माता जी को भोग लगवाया है यहे सीत प्रशाद तुम थाल के समेत महाराजा के लिए ले जाना। इस प्रसादि को आप खुद खा लो। महाराणी तारा देवी ने बड़ी शरदा से प्रसाद पा लिया और सब घरों को रवाना हो गये। माता के पुजारी ने महाराणी तारा देवी के हाथ धुला कर वोह जो माता जी के भोग का थाल रखा था महाराजा के लिए दे दिया। थाल पकड़ते ही महाराजा को बड़ा करोध हुआ

तो उस थाल में क्या क्या नजर पड़ा जो पान पतर थे वोह पूड़ीएं नजर आई और चमेली के सफैद फूल थे वेह चावल नजर पड़े जो केले थे वोह मांस की नयाईं नजर पड़े रुमाल से ढका हुआ थाल लेकर राणी बाहर को चली तो महाराजा ने बड़े करोध से महाराणी तारा के हाथ से थाल छीन लिया। रुमाल उठा कर देखा तो पूड़ीयों की बजाए पान पतर निकले और जो चावल समझता था वोह चमेली के फूल निकले, जो मांस समझता था वोह केले निकले देख कर राजा बड़ा हैरान हुआ और जो खड़ां का एक पैर संदूक में रखा था वोह भी श्री दुर्गा माता जी की शक्ति से यहां आ गया। महाराजा और हैरान हुआ कि खड़ां का पैर मैंने तो संदूक में रखा है देखता हूं क्या वोह हो खड़ां है जां और है घर जाकर देखा तो सन्दूक में खड़ां का पायों नहीं है। राजा को ज्ञान हुआ । तो महाराजा ने तारा देवी से पूछा यह क्या शक्ति है। मुझे और विशवास होना चाहिए तारा राणी रसोंई करने लगी तो अगिन

ना जले। राजा ने कहा शक्ति से काम लो। तारा देवी ने जवाला जी को याद किया तो बगैर माचस से अगनी जल पड़ी। महाराजा हैरान होकर कहने लगा मुझे माता जी के दरशन कराओ। तारा देवी ने कहा रोहीतास पुत्र की बली देने से दर्शन हो सकता है। राजा ने तलवार से रोहीतास का सीस काट दिया तो दुर्गा मात प्रतख साख्यात शेर के समेत सामने आ खड़ी हुई और रोहीतास को सुरजीत कर दिया और महाराजा हरीश चन्दर भी श्री दुर्गा माता भा भक्त बन गया माता जो की भक्ति करने लगा।

बोल साचे दरबार की जय॥

सुख राजे हरि चन्द घर नार सु तारा लोचन राणी॥
साध संगति मिल गांवदे रातीं जाए सुणे गुरबाणी॥
पिछों राजा जागिआ अधी रात निखड विहाणी॥
राणी दिस ना आवई मन विच वरत गई हैराणी॥
हौर सु रातीं उठ के चलिआ पिछे तरल जुआणी।
राणी पहुंची संगती राजे खड़ी खड़ाओं नीसाणी॥
साध संगत आराधिया जोड़ी जुड़ी खड़ाओं पुराणी॥
राजे डिठा चलित इहे इहे खड़ांव है चोज विडाणी॥
साध संगत विटहुं कुरबाणो॥ [वारां भाई गुरदास जी विचों

बूआ दाती दे

भेट तरज—नैण प्रीतो दे बैहजा बैहजा करदे

बूआ दाती दे सेवक जय जय करदे

शरधा भगती नाल सिर चरनां ते धरदे

दाती दे दवार ते पियार नाल मिलके

ते करदे प्रेमी सतसंग जी

नाम जप जीवन बनाइअा सचे सेवकां ने

भगतां ने चोला लिआ रंग जी

बाबा जितोमल ज़ऐ भगत प्रेमी पाप कपट तों डरदे बूआ...

बूआ बाल कंनियां दा झंड़ी-असथान सोहणा

मंदर अजब रंगीला

कतक दी पुंनियां नूं मेला लग्गे हेर साल

भगतां दी लगी होई लीला

भुल्लां बखशौंदे ते धियौंदे बूआ दाती जी नूं

भव सागर पऐ तरदे। बूवा...

दवार जो कोई जांवदे ने मंगे फल पाँवदे ने

दुख रोग हो जांदे दूर जी

बूआ दाती अंग संग भगतां दे सदा रहिंदी

पापीयां नूं करदी है चूर जा

बूआ बाल कनिआ दे दुवार ते सेवक

हेर साल हाजरी भरदे। बुवा...

हमने मय्या के दर्शन को

तर्ज—हमने गाउं के पनघट से [एक विचारा]

प्रेमी जी प्रेमी ॥

हमने मईया के दर्शन की करली है आज तयारीयां।
भेट हाथ में ले ली हम ने, नारीयल सात सुपारीयां।
यहां सड़के हैं, वहां ढकोए हैं ॥
यहाँ नलके हैं, वहां नदीऐं हैं ॥
यहां कपटी, वहां प्रेमी हैं ॥
यहां भजन कबी, वहां नेमी हैं ॥
यहां बिलडिंग हैं, वहां प्रबत हैं ॥
यहां शेर आब, वहां सरबत हैं ॥
दरशन के पैहले करते हैं इशनान सभी नर नारीआं
भेट हाथ में ले ली हमने, नारीयल सात सुपारीआं
यहां सिनमें हैं, वहां शक्ति हैं ॥
यहा ठगी है, वहां भक्ती है ॥
यहां पपी, वहां पवित्र हैं ॥
यहां वैरी हैं ॥ वहां मितर हैं ॥
यहां बगले हैं, वहां तोते हैं ॥
यहां बिजली है, वहां जोतें हैं ।
[दुरगा] से फल लेना है जी, साचे भगत पुजारीयां
भेट हाथ में ले लो हमने, नारीयल सात सुपारीआं ॥

मेरी माँ की सोहणी मूरत है

भेट तर्ज मेरे सपनों में इक सूरत है [जानवर और इनसान]

मेरी मां की सोहणी मूरत है।
भगवन की बिलकुल सूरत है।
दरशन की मुझे तो ज़रूरत है।
सीस मय्या के मुकट पियारा लगे॥
मां के मंदर में जोती नियारी जगे॥
प्रेमी दरशन पाए जग सीस झुकाए
ऐसी शक्ति मय्या जी की मूरत है
दरशन की मुझे तो जरूरत है। मेरी मां.....
फल भगतों को देती महां रानी मय्या
आस सभ की पहुचाती भवानी मय्या
जो भी दर पर जाए गुन मय्या जी के गाए
ऐसी शक्ति मय्या जी की मूरत है॥
दरशन की हमें तो जरूरत है। मेरी मां ...
मां के दुवारे पै देखे नजारे कई॥
देखे मय्या के भगत पियारे कई॥
भेटा [प्रव ना] गाए, आस मय्या जी पहुचाए
दरसन की मुझे तों जरूरत है॥
मेरी मां की सोहनी मूरत हैं॥

श्री संतोषी माता की अमर कथा

दोहा—श्री संतोषी मां की कथा सुने कर ध्यान ।
सुख संपती पाये दुध पुत्र और मान ।

चोपाई—संतोषी माँ के पिता गणेश ।
कांट देवे' जो सकल कलेश ।
रिद्ध सिद्ध है माता प्यारी ।
दादा जी हैं शिव भंडारी ।
सोना चांदी मुगाँ मोती ।
दया धर्म की जग रही जोती ।
सकल दुख का होता नाश ।
(सेवक) को चाहिए बिशवाश ।

* ब्रत धारन करने की विधि *

इस ब्रत को करने वाला कथा कहते व सुनते समय हाथ में गुड़ और भुने हुए चने रखे। सुनणे वाले 'संतोषी' माता की जय, संतोषी माता की जय जय कार मुख से बोलते जावें । कथा समाप्त होने पर हाथ का गुड़ चना गौ माता को खिलावें। कलश मेंरखा हुआ गुड़ चना सभ को प्रसाद के रूप में बाँट दें कथा के पूर्व कलश को जल से भरें उसके ऊपर गुड़ चने से भरी कठोरी रखे । कथा समाप्त होने और आरता होने के बाद कलश के जल को घर में सब जगहों पर छिड़के

और बचा हुआ जल तुलसी की क्यारी में डाल देवें। सवा आने का गुड़ व चना लेकर माता दा बरत करं। सवा पैसे का गुड़ ले तो भी कोई आपत्ति नहीं। घर में हो तो लेवें। विचार न करें क्योंकि माता की भावना भूखी, कम ज़्यादा कोई विचार नहीं। इस लिए जितना भी बन पड़े प्रसाद अर्पण श्रद्धा और प्रेमसेप्रसन्न मन हो ब्रत करना चाहिए। ब्रत के उधापन में अढाई सेर खाजा, मोमनदार पूड़ी, खीर चने का शोक नैवेधरखें घी का दीपक जला सन्तोषी माता की जय जयकारबोल नारियल फोड़ें। इस दिन घरमें कोई खटाई न खवायें और ना आप खावें न किसी दूसरे को खाने दें इस दिन आठ लड़कों को भोजन करावें देवर जेठ घरकटम्ब लड़का मिलता हो तो दुसरे को बुलाना नहीं कुटुम्ब में न मिले तो ब्राह्मणों के रिसतेदार के या पड़ोसियों के बुलावें। उन्हे खटाई की कोई वस्तु न दें तथा भोजन करा यथा शक्ति दक्षिणा देवें नगद पैसा न दें कोई वस्तु दक्षिणा में दें वरत करने वाला कथा सुन प्रशाद ले, एक समय भोजन करें। इस प्रकारसे माता अत्यन्त प्रसन्न होगी; दुख दरिदरता दूर होकर मनोकामना पूरी होगी।

एक बुढ़िया थी और उसके सात बेटे थे। छः कमाने वाले थे एक निकम्मा था। बुढ़िया माँ छहों पुत्रों

को रसोई बनाती, भोजन कराती और पिछे जो कुछ बचता तो सातवें को दे देती थी परन्तु वह बड़ा भोला भाला था, मन में कुछ विचार न करता था एक वह अपनी बहू से बोला—'देखो' ! मेरी माता का मुझ पर कितना प्रेम है ? यह बोली—क्यों नहीं। सबका झुठा बचा हुआ तुमको खिलाती है। वह बोला ऐसा भी कहीं हो सकता है ? मैं जब तक आँखों से न देखं मान नहीं सकता। 'बहू ने हंस कर कहा—देख लोगे तब तो मानोगे !

कुछ दिन बाद बड़ा त्योहार आया, घर में सात प्रकार के भोजन और चूरमा लडडू बणे वह जाँचने को सिर के दर्द का बहाना कर पतला कपड़ा सिर पर ओढ़कर रसोई घर में सो गया और कपड़े में से सब देखता रहा। छहों भाई भोजन करने आये उसने देखा माँ ने उनके लिए सुन्दर सुन्दर आसन बिछाये हैं, सात प्रकार की रसोई परोसी है। वह आग्रह करके जिमाती है। वह देखता रहा। छहों भाई भोजन कर उठे तब माँ ने उसकी झूठी थालियों में से लडडूओं के टुकड़ों को उठाये और एक लडडू बनाया जूठन साफ कर बुढ़िया माँ ने पुकारा—उठ बेटा ! छहों भाई भोजन कर गये अब तूं ही बेटा बाकी है उठ न ! कब खायेगा ! वह कहने लगा मां मुझे भोजन

नहीं करना। मैं प्रदेश जा रहा हूं। मा।। ने कहा कल जाता हो तो आज ही चला जा। वह बोला हाँ हाँ। आज ही जा रहा हूं। यह कह कर वह घर से निकल गया। चलने समय बहू की याद आई वह गौशाला में कडे थाप रही थी। जाकर वह उससे बोला—

दोहरा—मैं जाऊ प्रदेश में तुम घर करो अराम।।
धर्म शर्म शुभ कर्म से पूरन होगे काम।।

वह बोली जाओ पिया आनन्द ते हमरो सोच हटाय। राम भरोसे हम रहे ईश्वर तुम्हें सहाय। दो निशानी अपनी देख धरू मैं धीर। सुधि मत हमरी विसारियो रखियो मन गम्भीर।

वह बोला—मेरे पास तो कुछ नहीं यह अगूठी है सो ले और अपनी कुछ निशानी मुझे दे। वह बोली—मेरे पास क्या? यह गोबर भरा हाथ है यह कहकर उसका पीठ में गोबर के हाथ का थाप मार दी। वह चल दिया। चलते-चलते दूर देश में पहुंचा। वहां पर एक साहूकार की दुकान थी वहां जाकर कहने लगा—भाई मुझे नौकरी पर रख लो। साहूकार को जरूरत थी। बोला—रह जा लड़के ने पूछा—तनखा क्या दोगे? साहूकार ने कहा—काम देख कर मिलेंगे। साहूकार को नौकरी मिली। वह सवेरे सात बजे से दो बजे तक नौकरी बजाने लगा कुछ दिनों में दुकान

का सारा लेन देन हिसाब किताब ग्राहकों को माल बेचना सारा काम करने लगा। साहूकार के सात आठ नौकर थे वे सब चक्कर खाने लगे यह तो बहुत हुशियार बन गया है सेठ ने भी काम देखा और ३ महीने में ही उसे आधे मुनाफे का सांझीदार बना लिया। १२ वर्ष में ही सेठ बन गया और मालिक सारा कारोबार उस पर छोड़ कर बाहर चला गया। अब बहू पर क्या बीती सो सुनो!

सास ससुर उसे दुःख देने लगे। सारा गृहस्थी का काम करके उसे लकड़ी लेने जंगल में भेजते। इस बीच घर की रोटियों के आटे से जो भुसी निकलती उस की रोटी बनाकर रख दी जाती और फूटे नारियल की नरेली में पानी। इस तरह दिन बीतते रहे। एक दिन वह लकड़ी लेने जा रही थी कि रास्ते में बहुत सी स्त्रीयों संतोषी माता का व्रत करती दिखाई दी वहाँ वोह खड़ी होकर कथा सुनने लगी—बहनो! यह तुम किस देवता का व्रत करती हो और इसके करने से क्या फल होता है? इस व्रत के करने की क्या विधि है, यदि तुम अपने व्रत का विधान मुझे समझा कर कहोगी तो मैं तुम्हारा बड़ा एहसान मानूंगी। तब उन में से एक एक स्त्री बोली सुनो यह संतोषी माता का व्रत है। इस के करने से निर्धनता दरिदरता का

नाश होता है । लक्ष्मी आती है । मन की चिंतायें दूर होती हैं । घर में सुख होने में मन को प्रसन्नता और शांति मिलती है। निपुत्री को पुत्र मिलता है। प्रीतम बाहर गया हो तो शीघ्र आवे। क्वारी कन्या को मन पसन्द वर मिले। राज दवारे में बहुत दिनों से मुकदमा चलता हो तो खत्म हो जावे कलह क्लेश की निवृत्ति हो सुख शान्ति हो घर में धन जमा हो पैसा जायदाद का लाभ हो रोग दूर हों जावे तथा और भी जो कुछ भी मन में कामना हो सो वे सब इस संतोषी माता की कृपा से पूरी हो जावे, इस में सन्देह नहीं।

यह पूछने लगी—यह व्रत कैसे किया जाए। यहभी बताओ तो बड़ी कृपा होगी।

स्त्री कहने लगी—सवा आने का गुड़ चना लेना। इच्छा हो तो सवा पांच आने का लेना या सवा रुपये का भी सहूलियत अनुसार लेना बिना परेशानी श्रद्धा और प्रेम से जितना भी बन सके सवाया लेना। सवा पैसे से सवा पाँच आने तथा इससे भी ज्यादा शक्ति और भक्ति अनुसार ले हर शुक्रवार को निराहार रह कथा कहना सुनणा। इसके विच क्रम टूटे नहीं लगातार नियम पालन करना। सुनने वाला कोई न मिले तो घी का दीपक चला उसके आगे चल के पात्र को रख कथा कहना परन्तु नियम न टूटे। जब तक कार्य सिद्ध

न हो नियम पालन करना और कार्य सिद्ध हो जाने पर व्रत दा उदघाटन करना। तीन मास में माता फल पूरा कराती है। इसमें यदि किसी के खोटे गृह हों तो भी माता वर्ष में अवश्य कार्य को सिद्ध करती है, कार्य सिद्ध होने पर ही उदयापन करना चाहिये बीच में नहीं उद्यापन में अढ़ाई सेर आटे का खाजा तथा इसी परिमाण से खीर तथा चने का सीरा करना। आठ लड़कों को भोजन कराना। जहां तक मिले देवर, जेठ भाई बन्धु, कुटुम्ब के लड़के लेना न मिले तो रिशतेदारों और पडौसियों के लड़के बुलाना। उन्हें भोजन करा यथा शक्ति दक्षिणा दे माता का नियम पूरा करना। उस दिन घर में खटाई कोई न खावे। यह सुन बुढ़िया के लड़के दी बहूचल दी रास्ते में लकड़ी के बोझ को बेच दिया और उन पैसे से गुड़ चना ले माता के व्रत की तयारीकर आगे चली ओह सामने मंदिर किसका है सभ कहणे लगे-संतोषी माता दा मंदिर है, यह सुण माता के मन्दिर में जा माता के चरणों में लोटने लगी। दीन हो बेनती करने लगी ! मां मैं निपट मूर्ख हूं व्रत के नियम कुछ जानती नहीं। मैं बहुत दुखी हूं। हे माता जग जननी मेरा दुखदूर कर।

मैं तेरी शरण में हूं माता को दया आई-एक शुक्र... बीता कि दूसरे शुक्रवार को ही इसके पति

दा पत्र आया और तीसरे को उसका भेजा हुआ पैसा आ पहुंचा। यह देख ज़ेठानी मूँह सिकोड़ने लगी इतने दिनों में इतना पैसा आया समें क्या बढ़ाई है! लड़के ताहने देने लगे काका के पास अब पत्र आने लगे-रुपया आने लगा-अब तो काके की खातर बढ़ेगी अब तो काकी बुलाने से भी नहीं बोलेगी। बेचारा सरलता से कहती भैया ! पत्र आवे रुपया आवे तो हम सभके लिए अच्छा है। एसा कहकर आँखों में आँसू भर कर संतोषा माता के मन्दिर में मातेश्वरी के चरणों में गिर कर रोने लगी— माँ मैंने तुमसे पैसा नहीं माँगा ? मुझे पैसे से क्या काम है ? मुझे तो अपने सुहाग से काम है। मैं तो अपने स्वामी के दर्शन और सेवा मांगती हूं। तब माता ने प्रसंन होकर कहा जा बेटी तेरा स्वामी आयेगा यह सुन खुशी में बावली घर में जा काम करने लगी तब संतोषी मां विचार करने लगी-इस भोली पुत्री को मैंने कह तो दिया तेरा पति आवेगापर आवेगा कहा से वह तो स्वपन में भी याद नहीं करता। उसे याद दिलाणे को मुझे जाना पड़ेगा। इस तरह माता उस बुढ़िया के बेटे के पास जा स्वपन में प्रकट हो कहने लगी-साहूकार के बेटे सोता है या जागता है वह कहता है माता ? सोता भी नहीं हूं जागता भी नहीं हूं बीच में ही हूं। कहो क्या आज्ञा है । माँ कहने लगी

तेरा घरु बार कुछ है या नहीं ? वह बोला मेरा सब कुछ है माता । मां बाप भाई बहन बहू क्या कमी है । माँ बोली—भोले पुत्र ! तेरी घरवाली घोर कष्ट उठा रही है मां बाप उसे बहुत दुख दे रहे हैं । वह तेरे लिए तरस ले रहीं है । तूं उसदी सुधि ले ।

वह बोला—हां माता यह तो मुझे मालूम है परन्तु जाउं कैसे ? प्रदेश की बात लेन देण का कोई हिसाब नहीं कोई जाणे का रास्ता नजर नहीं आता कैसे चला जाऊं । माँ कहने लगी, मेरी बात मान सवेरे नहा धोकर संतोषी माता का नाम ले घी का दीपक जला दण्डवत कर दुकान पर जा बैठ, देखते 2 तेरा लेन देन चुक जायेगा, जमा माल बिक जाएगा । सांझ होते 2 धन का ढेर लग जायेगा । अब तोवह सवेरे बहुत जल्दी उठ जीव-बंधुओं से अपने सपने की बात कहता है वे सब उसकी बात अनसुनी कर दिल्लगी उड़ाने कहने लगे कहीं सपने भी सच्चे होते हैं । एक बूढ़ा बोला—देख भाई ! मेरी बात मान; इस तरहा सांच झूठ कहने के बदले देवता ने जैसा कहा है बैसा ही करना तेरा क्या है अब बूढ़े की बात मान वह नहा धोकर संतोषी माता को दण्डवत कर घी का दीपक जला दुकान पर जा बैठता है । थोड़ी देर में क्या देखता है देने वाले हिसाब लेने कोठे में भरे सामानों के खरीददार

गुदाम मैं सौदा करने लगे। शाम तक धन का ढेर लग गया। मन में माता का नाम ले चमत्कार देख प्रसन्न होकर ले जाने के वास्ते गहना, कपड़ा सामान खरीदने लगा यहा के काम से निबट तुरन्त घर को रवाना हुआ वहा विचारी बहू जंगल में लकड़ी लेने जाती है, लौटने वक्त माता जी के मन्दिर पर विश्राम करती है। वह तो उसके रोज रुकने का स्थान ठहरा। दूर से धूल कैसी उड़ रही है मां कहती है– हे पुत्री ! तेरा पति आ रहा है। अब तूं ऐसा कर लकड़ीयों के तीन बोझ बना ले एक नदी के किनारे रख, दूसरा मेरे मन्दिर पर और तीसरा अपने सिर पर रख। तेरे पति को लकड़ी का गट्ठा देखकर मोह पैदा होगा-वह यहाँ रुकेगा.नाश्ता-पानी बना कर खाकर मा से मिलने जायेगा तब तू लकड़ियों का बोझा उठाकर जाना और बिच चौक में गठा डालकर तीन आवाजें जोर से लगाना लो सासूजी ? लकड़ियों का गट्ठा लोभूसी की रोटी दो, नारियल के खोपड़े में पानी दो। आज कौन मेहमान आया है। मां दी बात सुन बहू बहुत अच्छा माता जी बहुत अच्छा कहकर वह प्रसन्न मन हो लकड़ियों के तीन गठ्ठे ले आई एक नदी तट पर एक माता के मन्दिर पर रखा, इतने में होएक मुसाफिर आ पहुचा। सूखी लकड़ी देख उसकी इच्छा हुई कि अब यही निवास करें और

भोजन बना, खा पी कर गाँव जायें। इस प्रकार भोजन बना आश्राम ले वह गांव को गया। सबसे प्रेम से मिला।

उसी समय बहू सिर पर लकड़ी का गठा लिए आती है। लकड़ी का भारा बोझ आंगन में डाल जोर से तीन आवाज देती है—'लो सासू जी। लकड़ा का गठा लो, भूसी की रोटी दो नारियल के खोपड़े में पानी दो। आज मेहमान कौन आया है? यह सुनकर उसकी सास आ अपने दिए हुए दुखों को भुलाने के हेतु कहती है—बहू! ऐसे क्यों कहती हो? तेरा मालिक ही तो आया है। आ बैठ मीठा भात का भोजन कर कपड़े,गहने पहिन इतने में आवाज सुन उसका स्वामी बाहर आता है और अंगूठी देख व्याकुल हो जाता है मां से पूछता है माँ। यह कौन है?

मां कहती है—बेटा यह तेरी वहू है। आज बारह वर्ष हो गये तूं जब से गया है तब से सारे गांव में जानवर की तरह भटकती फिरती ह। काम काज घर का कुछ करती नहीं चार समय आकर खा जाती है। अब तुझे देखकर भूसी की रोटी और नारियल के खोपड़े में पानी माँगती है वह लज़िलत हो बोला ठीकहै मां। मैंने इसे भी देखा है और तुम्हें भी देखा है। अब मुझे दूसरे घर का ताला दो मैं उसमें रहू। तब मां बोली—ठीक है बेटा! तेरी मर्जी हो सो कर। तालो का गुच्छा पटक दिया।

उसने लेकर दूसरे मकान में जो तोसरे मंजिल के ऊपर का कमरा था खोल कर सारा सामान जमाया। एक दिन में वहा राजा के महल जैसा ठाठ बाठ बन घया अब क्या है ? वह सुख भोयने लगी। इतने मैं अगला शुक्रवार आया उसने अपने पति से कहा मुझे संतोषी माता का ब्रत का उद्यापन करना है उसका पति बोला बहुत अच्छा कर। खुशी से करले तुरन्त ही वह उद्यापन की तैयारी करने लगी उसने मंजूर किया परन्तु जिठानी अपने बच्चों को सिखालाती है देखो रे ! भोजन के समय सब लोग खटाई मांगना जिस से उसका उद्यापन पूरा न हो। लड़के जीमने आये। खीर पेट भर कर खाई। प्रतु बात याद आते ही कहने लगे—हमें कुछ खटाई दो, खीर खाना हमें भाता नहीं देखकर अरुचि होती है वह कहने लगी खटाई किसी को नहीं दी जायेगी। यह तो संतोषी माता का प्रशाद है लड़के उठ खड़े हुए बोले पैसा लाओ। भोली वह कुछ जानती नहीं थी, उन्हें पैसे दे दिये। लड़के उसी समय उठ करके इमली ला खाने लगे यह देख बहू पर माता जी ने कोप किया, राजा के दूत उसके पति को पकड़ ले गए जेठ जिठानी मनमाने खोटे वचन कहने लगे—लूट लूट कर धन इकठा कर लाया, राजा दूत उसे पकड़ कर ले गये। अब सब मालूम पड़ जायेगा जब जेल की मार

खायेगा। बहू से यह वचन सहन नहीं हुए। रोती रोती माता जी के मन्दिर में गई। हे माता! तूमने यह क्या किया हसा कर क्यों रूलाने लगी ?

माता बोली—पुत्री ! तूने उद्यापन करके मेरा व्रत भंग किया इतनी जल्दी सब बातें भुला दी। वह कहने लगी—माता भूली तो नहीं, न कुछ अपराध किया है। मुझे तो लड़कों ने भूल में डाल दिया। मैंने भूल से उन्हें पैसे दे दिए मुझे क्षमा करो। माँ ! बोली ऐसी भी भूल होती है। वह बोली—मां मुझे माफ करदो मैं फिर तुम्हारा उद्यापन करूंगी। मां बोली—अब भूल मत करना वह बोली—अब भूल न होगी मां। अब बताओ वे कैसे आवेंगे ? माँ बोली—जा पुत्री तेरा मालिक तुझे रास्ते में ही आता मिलेगा। वह निकली राह में पति मिला। वह पूछती है, तुम कहां गये थे ? तब कहने लगे, इतना धन जो कमाया उसका टैक्स राजा ने मांगा था वहभरने गया था। वह प्रसन्न हो बोली—भला हुआ अब घर को गये, कुछ दिन बाद फिर शुक्रबार आया। वह बोली—मुझे माताजी का उद्यापन करना है। पति ने कहा-करो वह फिर जेठ के लड़कों को भोजन के लिए कहने गई, जिठानी ने एकदो बात सुनाई और लड़कों को सिखाने लगी तुम सब लोग पहले ही खटाई मांगना।

लड़के कहने लगे हमें खीर खाना नहीं भाता, जी बिगड़ता है कुछ खटाई खानेको दो तो। वह बोलीखटाई खाने को नहीं मिलेगी खाना तो आओ। वह ब्राह्मण के लड़के लाकर भोजन कराने लगी, यथा शक्ति दक्षिणा की जगह उन्हें एक २ फल दिया। इससे संतोषी माता प्रसन्न हुई। माता की कृपा होते ही नव मास उसको चन्दरमा के समान सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्र को ले कर प्रतिदिन माता जी के मन्दिर को जाने लगी। मा ने सोचा के वह रोज आती है आज मैं क्यों न इसके घर चलूं। इसका आसरा देखूं तो सही विचार कर माता ने भयानक रूप बनाया गुड़ और चने से बना मुख। ऊपर स सूंड के समान होठ उस पर मक्खीयां भिनभिना रहीं हैं।

देहली में पांव रखते ही उसकी सास चिल्लाई देखो रे। कोई चुड़ै डाकिन चली आ रही हे लड़को इसे भगाओ। नहीं तो किसी को खा जायेगी। लड़के डरने लगे और चिल्ला कर खिड़की बंद करने लगे। वह एक रोशनदान में से देख रहीथी। प्रसन्नता से पगली बह चिल्लाने लगी। 'आज मेरी माता मेरे घर आई है। यह कह बच्चे को दूध पीने से हटाती है। उतने में तो सास का क्रोध फट पड़ा। बोली—रॉड

इसे देखकर उतावली हुई है ? बच्चे को पटक दिया। इतने में माँ के प्रताप से जहा देखो वहीं लड़के ही लड़के नजर आने लगे। वह बोली—मा मैं जिसका ब्रत करती हूं यह वही संतोषी माता हूं। इतना कह के झट से सारे घर के किवाड़ खोल देती है। सब ने माता के चरण पकड़ लिये और बिनती कर कहने लगे हे माता ! हम मूर्ख हैं अज्ञानी हैं पापी हैं, तुम्हारे ब्रत की विधी हम नहीं जानती तुम्हारा ब्रत भंग करके हमने बहुत बड़ा अपराध किया है। हे जगत माता आप हमारा अपराध क्षमा करो इस प्रकार माता प्रसन्न हुई। माता ने बहू को जैसा फल दिया वैसा फल सब को दे। जो पढ़े उसके मनोरथ पूर्ण हों। बोलो संतोषी माता की जय।

योग सिद्ध विदेह जनक को गुरु अष्टावक्रने आधे श्लोक में ही सब शास्त्रों का सार बता दिया ग्रंथकरोड़न में कहा कहूं मैं सब दा सारा ब्रह्म सत्य जग झूठ जीव ही ब्रह्म निहार। जीव से ही जीवन जगत माया खेलत खेल। ब्रह्म रूप पहिचान लो कटे जगत का जेल।

* *
* *

संतोषी माता की आरती

जै जै जै नंतोषी माता भगत तेरें गुन गाते हैं।
शर्द्धां से जो करे आरती मन बाँछत फल पावे।

गनपत जी की राज दुलारी।
तुझ को पूजे सब संसारी।
गुड़ चने मेवे का मया तुझको भोग लगाते है।
जै जै जै संतोषी माता भगत तेरे गुण गाते हैं।
गल फुलों की सज रही माला॥
भगतन की करती प्रित पाला॥

शुक्रवार [व्रत जो करते उनके दुःख हट जाते हैं।
जै जै जै संतोषी माता भगत तेरे गुण गाते हैं।

सुन्दर तेरा भवन मया जी॥
भगत कराते हवन मया जी।।
तेरी जोत जगाकर मया जागा भगत कराते हैं।
जै जै जै संतोषी माता भगत तेरे गुण गाते हैं।
देहने हाथ में फूल तेरे मां॥
बाँहे हाथ त्रिशुल तेरे माँ॥
सेवक तेरी कर रहें पूजा दर्शन करना चाहते हैं।
जै जै जै संतोषी माता भगत तेरे गुण गाते हैं।

भगत बाबा जितो मल्ल बूआ दाती जी के

झिड़ी स्थान का पूरा इतहास

जंमू कटड़ा वैष्नों देवी से तीन मील की दूरी पर ऐक ग्रार गाम है जिसमें श्री वैष्णों माता जी का ऐक भगत बाबा जितो मल जो हूए है जों श्री भगवती जी की घोर तपसिया करते थे। श्री वैष्णों माता जी इस की भगती प्रेम देख कर बहुत प्रसंन हुई तो माता जी ने भगत को साखक्षात दरशन दीऐ। भगत जी ने अती प्रसंन होकर माता जी [illegible] चरनों में नमसकार करी। माता जी ने कहा भगत जी मैं आप की सच्ची भगती देख कर आई हूं। तुम वरदान मांगो तुझे किस चीज़ की इछा है। भगत जी ने कहा मैं तों सिरफ आप जी के दरशन की [illegible] रखता हूं। मैं जब याद करूं मुझे दरशन दिया [illegible]। भगवती जी ने कहा दरशन तो अब आप को हो [illegible] हैं। बार बार दरशन के लीए मैं तुमारे घर में कंनिआ के रूप में आऊंगी मेरा नाम वैष्णों नहीं रखना मेरा नाम बूवा दाती जी कौड़ी देवी के नाम से पुकारना। अब तेरे गाम का नाम गार है फिर बूवा दी गार होगा। [illegible] माल के बाद भगवती जी ने भगत के घर में कंनिआ [illegible] रूप मैं अवतार लीया। भगत जी की एक भाबी जोजां थी जो डैन मत्र से भगत जी की संतान का कालजा

निकाल कर मार देती थी । एक रोज बूवा दाती पर वार करने लगी पर बूवा दाती शक्ती थी शक्ती की शक्ती से जों जा की नजर खतम हो गई । अब ना किसी को देख सके और ना ही किसी पर वार कर सके । भगत बाबा जितो मल जी जंमू से 12 बारां मील की दूरी पर ऐक राजपूत बीर सिंह के साथ खेती किसानी का काम करते थे । एक ाल बाबा जितो मल जी ने झोने का फसल बोइआ । तो भगवती की कृपा से खेत बहुत प्रफुलत हूऐ फसल अनाज आगे से चार गुना जिआदा हूआ बाबा जी ने खूब बोराए भरी कुछ लुटेरों ने बोरीओं को देख कर लुटने का इरादा कर लीआ । सोचा बाबा गरीब साधू बूड़ा हमारा किआ बिगाड़ देगा चलो बोरीएं उठा लो । लुटेरे बोरीआं उठा उठा कर भागने लगे बाबा जी कटार के साथ बोरीआं फ़ाड़ कर अनाज धरती पर ढे लगाने लगे लुटेरों ने बाबा जी को पीटा और एक पापी ने बाबा जी से कटार छीन कर बाबा जी के सीने में मार दी जो कटार सीने में धस गी । अब लुटेरों ने सोचा बाबा जी तो खतम हो गए हैं । चलो भाग चलो नहीं तो हम सभ पकड़ जाऐंगे । येह सोच कर लुटेरे भाग गऐ । बाबा जी आखरी दमों पर आने लगे तो । श्री जगदम्बा मईया जी को याद कीया । तों भगवती श्री वैष्णों देवी

जी एक छिन में प्रगट होकर भगत जी के सीने से कटार निकाल दी। भगत जी के नेत्र खुले तो आंखों से देख लीआ के भगवती श्री वैष्णों माता जी ने मेरे सीने से कटार निकाली है। और अंत समें मुझे दरशन दीए है। हाथ जोड़ कर नमसकार करता है और होठों से कैहता है।

मां............ तूं ....धंन ....है ....

भगवती जी ने कहा भगत तुमारी अैसी दशा कैसे हुई है भगत जी बोले माता जी कुछ लुटेरों ने मेरी मेहनत का पैदा कीआ हुआ अनाज जबरन छीन लीया है,

और येह कटार मेरे सीने में मार कर भाग गए हैं। भगवती जी ने बोला भगत जी तुम बोलो अब कया चाहते हो कहो तो लुटेरों का खातमा करूं चाहो तो उने इसी वकत पर वापस मंगा कर तेरे से माफी मांगने को हाजर करवाऊं कहो तो तुझे इसी वकत ठीक ठाक कर दूं। और जैसे बोलो उन को सजा दूं। भगत जी बोले माता जी अब मुझे ठीक होने की इच्छा नहीं अब मेरे चोले को बदलने दो और मात गर्भ में आना जाना चुरासी का गेड़ खतम करो और अपने भगत का नाम अमर करो जी॥ और लुटेरे को सज़ा क्या देनी है उन को नसीहत दो॥ माता जी ने कहा कैसी नसीहेत दूं। भगत जी बोले आज कार्तक पूणंमा

का रोज है तो आज के दिन से यह बात याद रहे जिन्हों ने किसी मेहनती का अनाज छीना है जो इस अनाज को खाए उन की सारी सन्तान यहां आज के दिन आन कर अपना कसूर प्रगट करे, के हमने किसी निर्धन मेहनती का हक छीना है माता जी ने तथा वस्तु कहा, वो आखरी दम में रसना से अवाज़ निकली जो नीचे लिख रखी है–

जै भगवती ......जै भगवती ·· ......जै भगवती.........
अपनी पवित्र रसना से मां की जै जै कहता हुआ शरीर से प्राण तयाग गया। बिबान आए, देवतों ने फूलों की बरखा करी, आकाश बाणी हुई भगत जी की आतमा भगवती भगवान जी की ॥

सच्ची जोत

मैं जोत से जोत मिल गई बोलो बाबा जितो मल जी की जै बोलो। बूआ दाती जी की जै बोलो श्री वैशनो माता जी की जै। जे बाबा जी का मिरतक शरीर था उस देही का सघसकार करने को नगर और आस पास के लोगों ने प्रबन्ध करने का उधम किया। बूआ दाती को खबर मिली जो पिता जी के लिए भोजन लेकर आती थी देख कर बहुत विरलाप किया। आज ने चाचा

सतो राम जी को कैहने लगी आपने भाई को आपने हाथों से अगन भेंट करने को लम्बू लगाओ, चाचा सतो राम ने कहा बेटी मैं नेत्रहीन कैसे लम्बू लगाऊं। बूआ दाती जी ने कहा नेत्र ठीक हो जाएंगे ॥ लम्बू लगाकर पीछे नहीं देखना। सतो राम ने हाथ में माचस पकड़ी तो नेत्र ठीक हो गए। भाई का सन्सकार किया। बूआ दाती पिता जी के इस विछोड़े को न सहन करते हूए सोग और वियोग मैं पिता जी के साथ अमर होने को साथ ही आपने प्राण भी त्याग दीए। अर गाम वाले लोगों ने बूआ दाती जी का भी ससकार कर दिया और यादगार तथा समाधीए मन्दिर बनवाए। जहां पर हर कारतक पूर्णमाशी के रोज हर साल मेला लगता है। कीरतन होते हैं ढोल बजते हैं जिन्हों जिन्हों ने बाबा जी का अनाज छाना था उन की सन्तान के यहां सिर मार मार कर जड़ीए खेलते हैं और आपने कीए अपराध की क्षमा मांगते हैं और खिचड़ी के भन्डारे बना कर बांटते हैं दान यज्ञ करते हैं जो सच्चे दिल से खिमा मांगते हैं उन के सरब कारज सिध होते हैं दुध पुत्र धन, सुख, शांती, भक्ति, शक्ति मिलती है। निशचय वाले के बाबा जी अर बूआ दाती जी अर श्री वैशनों माता जी सरब कारज सिध्द करते हैं। नेहचा का फल मिलता है। बोल सच्चे दरबार की जय ॥

सच्चा द्वारा बूआ दाती का

भेंट तर्ज—पंजाबी लोक गीत

मेला कतक दी पुनिआं नूं लगदा
सच्चा द्वारा बूआ दाती दा
करदे ने प्रेमी द्वारे जाके सतिसंग जी
भक्तां ने चोला लिया नाम विच रंग जी
एह तां जीवन है दुलबुला झग दा
सच्चा द्वारा बूआ दाती दा।।१।
भक्तां दा बूआ दाती करे कलयान जी
पाप लत्थ जांदे जेहड़ा करे इशनान जी
ठंडा जल है नदीं दे विच वगदा
सच्चा द्वारा बूआ दातीं दा ॥2।
सेवक प्रेमी बूआ दाती नूं धियांवदे
वंड देने खिचड़ी ते भुल्ला बखछांवदे
दाती पार उतारा करे जग्ग दा
सच्चा द्वारा बूआ दाती दा ।3।
अजब निरालीं शोभा झिड़ी दे स्थान दीं
करां की तारीफ बूआ शक्ति दे शान दीं
काला मूंहे हुंदा चोर पापी ठग्ग दा
सच्चा द्वारा बूआ दाती दा ॥4'।

भक्त जित्तो मल ते बूआ दाती

दे टप्पे

भेंट तर्ज—टप्पे वालों माहीया

सोहना मन्दिर रंगीला ए
भक्त बाबा जित्तो मल्ल दे द्वारे भगतां दी लीला ए
महिमा बहुत नियारी ए
बूआ दाती बाल कनियां जित्तो मल्ल दी दुलारी ए
जल नदीं विच्च वगदा ए
कतक दी पुनियां नूं मेला हर साल लग्गदा ए
दो पत्र अनारां दे
बूआ दाती बाल कंनियां दुख कटदी बिमारां दे
जेहड़े भगतीं करदे ने
कटीं जाए चुरासीं ओहनां दीं भव सागर तरदे ने ॥
फल करनीं दा लैणा ए
डोलना नहीं रूप वेखके बूआ दातों जो दा कैहणा ए
एह बुत तां खड़ाऊणा ए
कर लौ भजन भगतो वेला हेत्थ नहीं औणा ए
लड़ माता जी दा फड़ो भगतों
आशां सभ होन पूरीयां भेटा माता दीटां पड़ो भगतो
[सेवक] द्वार ते आऊंदे ने
कीतिआं गुनावहां दी आके भुल्ल बखछाँऊंदे ने

माँ का द्वारा

भेंट तर्ज—सुन चम्पा सुन तारा [आपना देश]

मां का द्वारा जग से नयारा
जैसे चमके धरूह तारा

देखो खूब शोभा पाए, जिसमें रहेती मेरी मात
आओ हम सब भगतो गाएं भेटा मां की सारी रात

दर्शन का करलो जी इरादा
करता हूं तुम से मैं यह वादा

मय्य पूर्ण काम करेगी जो भी है काम तुम्हारा
मां का द्वारा जग से नयारा जैसे चमके धरूह तारा

मां के गले में सजे माला
भवन मय्या का है आला

आओ हम भी पूजो भगतो जिसको पूजे जहां सारा
मां का द्वारा जग से नयारा जैसे चमके धरूह तारा

प्रेमी हैं द्वारे पे जाते
भेटां हैं मय्या की गाते

'प्रवाना' जोती का कैहता ले लो मय्या का सहारा
मां का द्वारा है जग से नयारा जैसे चमके धरूह तारा